

शिक्षक दिवस अभिनंदन

आपने हमें ज्ञान दिया, सही राह पर चलना सिखाया।

हर कठिनाई में विश्वास दिया, आगे बढ़ना सिखाया।

आपके प्रेम, धैर्य और मार्गदर्शन का ऋण हम कभी न चुका पाएँगे।

हे गुरुजन, आपके प्रति हृदय से आभार—आपने हमारा जीवन संवार दिया।

*"A teacher takes a hand,
opens a mind,
and touches a heart."*



With Best Compliments From

ST. JOSEPH'S SR. SEC. SCHOOL

Pilibhit Road, PURANPUR - 262 122

Phone : 05880-262161

e-mail : sjssspuranpur@gmail.com, www.stjosephschoolpuranpur.org



वर्ष 32

सितम्बर 2026

अंक 09

बरेली धर्मप्रांतीय पत्रिका चेतना



धन्य बालिका - ईश्वर का प्रतिरूप

निजी प्रसारण हेतु



पल्ली पर्व - रुद्रपुर



लोकधर्मी, धर्मसंधीय प्रधानाचार्या बैठक - बरेली



BEC बैठक - बाजपुर



वन महोत्सव - टनकपुर



पुरोहिताई परिधान ग्रहण समारोह - प्रयागराज



कारावास रिहाई की खुशी - सितारगंज



राष्ट्रीय युवा रविवार - शाहजहाँपुर



वृद्ध दिवस - भाग्नी



राष्ट्रीय युवा रविवार - पिथौरागढ़



SHG प्रशिक्षण - काठगोदाम



राष्ट्रीय युवा रविवार - ज्योलीकोट



स्वतंत्रता दिवस - मोती नगर



वृद्ध दिवस - टनकपुर



वृद्ध दिवस - धमोला



जैविक खाद प्रशिक्षण - पिपरिया



वृद्ध दिवस - ज्योलीकोट



वृद्ध दिवस - बैलपड़ा



वृद्ध दिवस - खटीमा



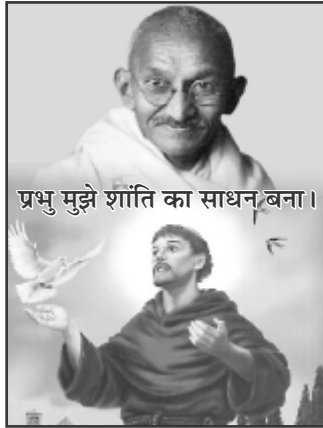
वृद्ध दिवस - पिपरिया



वृद्ध दिवस - पूरनपुर



चेतना



Patron

Most Rev. Ignatius D'Souza

Editor

Fr. Gregory Frank

Editorial Board

Fr. Ivan Crasta

Fr. Vivian Fernandes

Fr. Arun Saldanha

Fr. Francis Pinto

Fr. Vijay Tellis

Mrs. Sumita James

Miss Shweta D Cruze

Whatsapp No. : 8533886703

Publishing Head Quarters:

Bishop's House

63, Cantt., Bareilly - 243 001

website: www.bareillydiocese.org

Design & Printing

Conrad Publishing House

P-1/B-15, Opp. Dominos,

D.D. Puram, Bareilly

Phone: 0581-2300802

अनुक्रम

1. सम्पादकीय	फा. ग्रेगरी फ्रैंक	2
2. Bishop's Message	Most Rev. Ignatius D'Souza	3
3. धर्माध्यक्ष का संदेश	अति मान्यवर डा. इग्नेशियस डिसूज़ा	4
4. Bishop's Engagements	Fr. Charles P.	5
5. In Docile and Trusting Surrender	Sr. Esme da Cunha, FDCC	6
6. The Cross: A Path to Holiness	Sr. Smitha, FCC	7
7. The Girl Child - God's Feminine Image	Sr. Rinki Nayak, FMA	8
8. Mother of Sorrows Knows Our Struggles	Sr. Lavina Dabre, MSI	9
9. Women in the Church	Sr. Helen, UFS	10
10. Take Up Your Cross and Follow Me	Sr. Theresa Antony, BS	12
11. What are we 'TEACHING' India?	Sr. Rekha Punia, UMI	13
12. St. Mother Teresa	Nisha John Masih	14
13. माँ मरियम : ईश्वर का अनुपम उपहार	एलिजाबेथ पैट्रिक	16
14. उन्हें उड़ने दो	सि. नेन्सी रोड्रिगस DHM	17
15. शिक्षकों का सम्मान में	ऋत्विक साहनी	19
16. समाचार दर्शन		20
17. बाइबिल प्रश्नोत्तरी	सुश्री श्वेता डिक्रूज़	27

संत पिता का मतलब : सितम्बर 2026

जल की देखभाल के लिए:

आइए हम जल जैसे महत्वपूर्ण संसाधन के न्यायसंगत और टिकाऊ प्रबंधन के लिए प्रार्थना करें, ताकि सभी को इस तक समान पहुँच प्राप्त हो सके।

Holy Father's General Intention: September 2026

For the care of water:

Let us pray for a just and sustainable management of water, a vital resource, so that everyone may have equal access to it.



बेटी पढाओ, बेटी बचाओ एक विडंबना...?

9 अगस्त 2024 को कोलकाता के आर.जी. कर सरकारी अस्पताल में एक महिला डॉक्टर के साथ बलात्कार के बाद उसकी नृशंस हत्या की गई। उसके शरीर, गुप्तांगों पर आई चोटों से 2012 में दिल्ली में हुए निर्भया काण्ड की यादें ताजा कर दीं। सारे मामले में पश्चिम बंगाल की तत्कालीन सरकार की भूमिका जहाँ एक महिला मुख्यमंत्री थीं, वहाँ की पुलिस, अस्पताल प्रशासन का रवैया न केवल हैरान करने वाला है बल्कि एक लोकतंत्र सरकार में लोगों के साथ विशेषकर महिलाओं के साथ एक क्रूर मजाक है।

महिलाओं पर अत्याचार एक गंभीर और निरंतर बढ़ती हुई समस्या है जो समाज के विभिन्न हिस्सों में फैली हुई है। यह अत्याचार केवल शारीरिक हिंसा तक सीमित नहीं है, बल्कि मानसिक, भावनात्मक और आर्थिक शोषण के रूप में भी प्रकट होता है।

शारीरिक हिंसा: महिलाओं पर शारीरिक हिंसा एक गंभीर मुद्दा है जिसमें पिटाई, मारपीट और शारीरिक चोटें शामिल हैं। यह घरेलू हिंसा के रूप में भी होती है, जहाँ महिलायें अपने घर के भीतर भी असुरक्षित महसूस करती हैं।

मानसिक और भावनात्मक अत्याचार: इसमें महिलाओं को मानसिक रूप में प्रताड़ित करना, उनका आत्म विश्वास तोड़ना और मानसिक उत्पीड़न शामिल होता है। यह अत्याचार महिलाओं के आत्म सम्मान और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

आर्थिक शोषण: आर्थिक शोषण में महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता से वंचित रखना और उनके आर्थिक अधिकारों की अनदेखी करना शामिल है। यह शोषण अक्सर आर्थिक निर्भरता की स्थिति पैदा करता है, जिससे महिलायें निर्णय लेने की स्थिति में नहीं होतीं।

यौन हिंसा: यौन उत्पीड़न, यौन शोषण हमारे आर्थिक, शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्ग में आम बात सी लगती है। शायद ही कोई दिन गुजरता हो जब हम बालिकाओं पर यौन शोषण

और उत्पीड़न की खबरें न सुनते हों। आज के माध्यम, सोशल मीडिया नारी शरीर का ऐसे घटिया प्रदर्शन का माध्यम बना रहे हैं कि छोटे उम्र के लड़के भी यौन अपराध करने में नहीं हिचकते।

आठ सितंबर को हम माता मरियम के जन्म दिवस का पर्व मनाते हैं। भारत की कलीसिया इस दिन को 'बालिका दिवस' के रूप में मनाती है। ऐसे आचरण हमारे लड़कों और पुरुषों में बालिकाओं के प्रति सम्मान जगाने और परिवार तथा समाज में उन्हें सम्मान व मर्यादा की दृष्टि से देखने के लिये प्रेरित करना चाहिये। हमारी भारतीय परंपरा में हम देवी-देवताओं को पूजनीय मानते हैं, उन्हें भक्ति व श्रद्धा का पात्र मानते हैं। फिर उन्हीं देवियों के स्वरूप बालिकाओं व महिलाओं पर इतना अत्याचार क्यों होने लगता है? क्या यह सब देखकर हमारा मस्तक शर्म से झुकना नहीं चाहिए? क्या 'बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ' शब्द सरकार का मात्र एक जुमला बन कर रह गया है? यदि हम बालिकाओं का उचित सम्मान व आदर नहीं करते हैं तब बालिका माता मरियम का पर्व मनाने का औचित्य क्या है?

हमारे परिवारों में बालिकाओं को पर्याप्त शिक्षा प्रदान करते हुए उन्हें रोजगार देने का प्रयास करना चाहिए। महिलाओं के प्रति हमारे नज़रिये को बदलने की जरूरत है। महिला जीवन का उद्गम और पालन करने वाली है। जीवन को संजोने वाली है। यदि वही अत्याचार की शिकार होती है तब पृथ्वी पर जीवन कहाँ रह जायेगा?

मैं एक लड़की हूँ, मैं कली, मैं फूलवारी हूँ, मैं दर्शन हूँ, मैं दर्पण हूँ। मैं द्रोपदी हूँ, मैं सीता हूँ। मैं कभी जुए में हार गई, कभी अग्नि परीक्षा दिलवाई। कलयुग हो या सतयुग हो, इल्जाम मुझ पर ही आता है। शरीर के घाव तो भर जायेंगे, लेकिन मन की पीड़ा? सड़क पर बेसुध पड़ी लड़की आपकी बेटी या बहन हो सकती है। जो नारी का अपमान करें वह पुरुष कहलाने योग्य नहीं हैं। अपनी मर्यादाओं को समझो। बालिका का सम्मान करो।

ग्रेगरी फ्रैंक



Mary: A Life Born for God's Purpose



The Nativity of the Blessed Virgin Mary invites us to contemplate a profound mystery: **God prepares persons and events long before His plan becomes visible.** Though the

Bible does not narrate the birth of Mary, her life is clearly placed within God's plan of salvation. She was born to become the Mother of the Saviour, the one who would give Christ to the world.

St. Paul beautifully expresses this mystery: **“When the fullness of time had come, God sent his Son, born of a woman”** (Galatians 4:4). Mary was part of that **“fullness of time.”** Her birth was not an isolated event; it was part of God's loving preparation for the Incarnation. Mary teaches us that **every human life has a purpose in God's plan.** God told Jeremiah, **“Before I formed you in the womb I knew you, and before you were born, I consecrated you”** (Jeremiah 1:5). Each of us is known, loved and called by God. Our lives are not accidents; they are gifts entrusted to us for a mission.

What makes Mary exemplary is her openness to God's purpose. When the angel announced God's plan, she did not have all the answers. She simply trusted and responded: **“Here am I, the servant of the Lord; let it be with me according to your word”** (Luke 1:38). Her “Yes” changed the course of human history. Mary also teaches us that **God's plan is not always immediately understandable.** She treasured and pondered events in her heart (Luke 2:19, 51). She walked by faith, not by complete understanding. There were moments of joy, uncertainty, suffering and sorrow, yet she remained faithful. At the foot of the Cross, she stood with her Son (John 19:25). Her faithfulness teaches us to trust God even when His ways are beyond our understanding.

Mary reminds us that **God's greatest works often begin in hiddenness, silence and simplicity, where faith grows before the world sees the fruit.** To understand God's



purpose is not always to know where the journey will lead, but to trust the One who leads us, especially when the path is uncertain. **When we surrender our plans to God with the humility of Mary, our lives become a living “yes” through which God can continue His saving work in the world.** The purpose of Mary's life was always **Christ-centred.** At Cana, she told the servants, **“Do whatever he tells you”** (John 2:5). These words can also become the guiding principle of our lives: listen to Christ, trust Him and follow Him.

As we celebrate the birth of Mary, let us ask ourselves: **What is God's purpose for my life? What is He asking me to become? Am I willing to trust Him even when I cannot see the whole path?**

May Mary, whose birth prepared the way for Christ, teach us to surrender ourselves to God's plan with faith, humility and courage. May our lives, like hers, become instruments through which Christ can enter our families, our communities and our world. **“Let it be with me according to your word.” — Luke 1:38**

May the Nativity of the Blessed Virgin Mary renew in all of us the confidence that **God has a purpose for every life, and when we place ourselves in His hands, even our ordinary lives can become part of His extraordinary plan.**

† Ignatius D' Souza
Bishop of Bareilly



ईश्वर के उद्देश्य के लिए जन्मा एक जीवन

धन्य कुंवारी मरियम का जन्मोत्सव हमें एक गहरे रहस्य पर विचार करने के लिए आमंत्रित करता है: **ईश्वर अपनी योजना के दृश्य होने से बहुत पहले ही व्यक्तियों और घटनाओं को तैयार करते हैं।** यद्यपि बाइबिल मरियम के जन्म का वर्णन नहीं करती है, फिर भी उनका जीवन ईश्वर की मुक्ति की योजना के भीतर स्पष्ट रूप से निहित है। यह उद्धारकर्ता की माता बनने के लिए जन्मी थीं, वहीं जो संसार को मसीह (क्राइस्ट) प्रदान करेंगी।

संत पौलुस इस रहस्य को सुंदरता से व्यक्त करते हैं: **“जब समय की पूर्णता आई, तो ईश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो एक स्त्री से जन्मा”** (गलातियों 4:4)। मरियम उस ‘समय की पूर्णता’ का हिस्सा थीं। उनका जन्म कोई अलग घटना नहीं थी; यह देहधारण (Incarnation) के लिए ईश्वर की प्रेमपूर्ण तैयारी का हिस्सा थी। मरियम हमें सिखाती हैं कि **ईश्वर की योजना में हर मानव जीवन का एक उद्देश्य होता है।** ईश्वर ने यिरमियाह से कहा था, **“गर्भ में रचने से पहले ही मैंने तुम्हें जान लिया था, और तुम्हारे जन्म से पहले ही मैंने तुम्हें पवित्र किया था”** (यिरमियाह 1:5)। हममें से प्रत्येक ईश्वर द्वारा जाना जाता है, प्रेम किया जाता है और बुलाया जाता है। हमारे जीवन संयोग नहीं हैं। वे हमें एक मिशन के लिए सौंपे गए उपहार हैं।

जो बात मरियम को अनुकरणीय बनाती है, वह है ईश्वर के उद्देश्य के प्रति उनकी तत्परता और खुलापन। जब दूत ने ईश्वर की योजना की घोषणा की, तो उनके पास सभी उत्तर नहीं थे। उन्होंने बस विश्वास किया और उत्तर दिया: **“देखिए, मैं प्रभु की दासी हूँ; आपका कथन मुझ में पूरा हो जाये।”** (लूकस 1:38)। उनके ‘हाँ’ ने मानव इतिहास का मार्ग बदल दिया। मरियम हमें यह भी सिखाती हैं कि **ईश्वर की योजना हमेशा तुरंत समझ में आने वाली नहीं**

होती है। उन्होंने इन घटनाओं को संजोया और अपने हृदय में उन पर विचार किया (लूकस 2:19, 51)। वह पूर्ण समझ के साथ नहीं, बल्कि विश्वास के साथ चलीं। आनंद, अनिश्चितता, पीड़ा और दुख के क्षण थे, फिर भी वह वफादार बनी रहीं। क्रूस के चरणों में, वह अपने पुत्र के साथ खड़ी थीं (योहन 19:25)। उनकी वफादारी हमें ईश्वर पर तब भी भरोसा करना सिखाती है जब उनके मार्ग हमारी समझ से परे हों।

मरियम हमें याद दिलाती हैं कि **ईश्वर के सबसे बड़े कार्य अक्सर गुप्तता, शांति और सादगी में शुरू होते हैं, जहाँ दुनिया द्वारा फल देखे जाने से पहले विश्वास बढ़ता है।** ईश्वर के उद्देश्य को समझने का मतलब हमेशा यह जानना नहीं है कि यात्रा कहाँ ले जाएगी, बल्कि उनका नेतृत्व करने वाले पर भरोसा करना है, खासकर तब जब मार्ग अनिश्चित हो। जब हम मरियम की नम्रता के साथ अपनी योजनाओं को ईश्वर को सौंपते हैं, तो हमारा जीवन एक जीवंत ‘हाँ’ बन जाता है जिसके माध्यम से ईश्वर दुनिया में अपना उद्धार कार्य जारी रख सकते हैं। मरियम के जीवन का उद्देश्य हमेशा मसीह केंद्रित था। काना में, उन्होंने सेवकों से कहा, **“वह तुमसे जो कहे, वही करो”** (योहन 2:5)। ये शब्द हमारे जीवन का मार्गदर्शक सिद्धांत भी बन सकते हैं: मसीह की सुनो, उन पर भरोसा करो और उनका अनुसरण करो।

जब हम मरियम का जन्मोत्सव मनाते हैं, आइए हम खुद से पूछें: **मेरे जीवन के लिए ईश्वर का क्या उद्देश्य है? वह मुझे क्या बनने के लिए कह रहे हैं? क्या मैं उन पर भरोसा करने के लिए तैयार हूँ, तब भी जब मैं पूरे रास्ते को नहीं देख सकता?**

मरियम, जिनके जन्म ने मसीह के लिए रास्ता
(क्रमशः पृ. 11)



CATHOLIC DIOCESE OF BAREILLY

Bishop's Engagements

September 2026

Date	Day	Time		Programme
1 st – 4 th	Tue - Fri		AM	Office
5 th	Sat		AM	Office
		05:30	PM	Holy Eucharist: Feast of St. Mother Teresa, St. Alphonsus Cathedral, Bareilly
6 th	Sun	10:00	AM	Holy Eucharist: Feast of the Holy Cross Church, Baheri
7 th	Mon		AM	Office
8 th	Tue	08:00	AM	Visits Amariya and Kailash Colony
9 th	Wed	11:45	AM	Meets Mother General Rev. Sr. Jesus Cevallos SJT, Bishop's House, Bareilly
10 th – 11 th	Thu - Fri		AM	Office
12 th	Sat	05:00	AM	Leaves for Bangalore
13 th – 16 th	Sun - Wed		AM	99 th CCBI Executive Committee Meeting, St. John's NAHS, Bangalore
17 th – 18 th	Thu - Fri		AM	CBCI Standing Committee Meeting, St. John's NAHS, Bangalore
19 th	Sat		AM	Returns to Bareilly
		12:15	PM	Meets General Councilor Rev. Sr. Celine FMA, Bishop's House, Bareilly
		06:30	PM	Holy Eucharist: FCC Provincialate, Bareilly
20 th – 25 th	Sun - Fri		AM	Attends Annual Clergy Retreat (First Batch), TABOR DPC, Jeolikote
26 th	Sat	11:00	AM	Blessing of St. Michael's Chapel, Mona
27 th	Sun	10:30	AM	Pastoral Visit to St. Michael's Church, Bana
28 th	Mon		AM	Office
29 th	Tue		AM	Office
		06:00	PM	Holy Eucharist: Feast of Archangel Raphael, Shahjahanpur
30 th	Wed		AM	Office

Fr. Charles P. Secretary

In Docile and Trusting Surrender



These words can beautifully describe the attitude of Mary, as the angel Gabriel suddenly came to her with a message from God: *Peace be with you! The Lord is with you and has greatly blessed you!*

...Don't be afraid, Mary. God has been gracious to you.

Then came the bombshell: *You will become pregnant and give birth to a son. You will name Him Jesus... He will be called the Son of the Most High God...*

How much more was the poor girl able to register? *How can this be? I am a virgin!* She blurted out. But that seemed to be no problem at all!

The angel continued with a second bombshell, more mysterious than the first: *The Holy Spirit will come on you... and for this reason the holy child will be called the Son of God!*

The angel then told her about Elizabeth, very old, and yet now six months pregnant. He added: *For there is nothing that God cannot do!*

Mary bowed in humble and trusting surrender: *I am a servant of the Lord. Let it be done to me as He pleases.*

Mary remained in this attitude of humble surrender all her life. There were so many things she could not understand.

Elizabeth perceived this mystery immediately: *How is it that the mother of my Lord should come to me?* Even the baby in her womb leapt for joy!

Joseph had his doubts... but an angel reassured him: *Do not be afraid to take Mary as your wife. For it is by the Holy Spirit that she has conceived a son.*

And so the mystery of her life unfolded – a star and angels, poor shepherds and the magi!

The old man Simeon took the child in his arms, raised his eyes towards heaven and said: *Now Lord, You may let your servant go in peace, for my own eyes have seen Your salvation.* Then, turning to Mary he said: *And a sword shall pierce your own heart.*

Herod tried to kill the child, but Joseph was warned in a dream to take the child and the mother, and to flee to Egypt.

Her whole life revolved around this Son. Sometimes she understood Him, and sometimes she did not. *Why did you search for me? Did you not know I had to be about my Father's business?*

And then, one day, He left her... to be about the mission entrusted to Him by His Father. She followed Him discretely, wherever and whenever she could.

Son, they have no wine. She told Him at that wedding in Cana. *What is it to you? My time has not yet come.* And yet soon after, He worked His first miracle!

One day Mary came to meet Him. Jesus was informed that His mother and brothers had come to see Him. He did not move immediately. Instead He looked around and said: *Who is my mother? Who are my brothers?* Then Jesus answered His own question: *Whoever does the will of my Father in heaven, he is my brother, my sister and my mother.* Mt. 12: 50. That was Mary –humble, docile, totally surrendered to the Will of God.

She stood by His Cross, while He culminated His Mission, in excruciating agony. Jesus saw her and the disciple He loved standing there. He said to His mother: *Woman, Behold your son.* Then He entrusted her to John: *Behold your mother!*

A few instances... a few words! But these give us a glimpse of the bond that united

mother and Son. Her mission continued in the early Church, as a vivid presence of faith and fidelity.

She prayed with the believers, strengthening and sustaining them in their faith.

So too, Mary remains with the Church even today, as Mother, Intercessor and Guide.

Her mission will continue as long as that of her Son.

And His final promise is: *And I will be*

with you always, to the end of the ages. (Mt. 28:20)

Let us feel her protecting presence as she walks with us along life's journey, leading us on, until the day when we will meet Her beloved Son in the heavenly mansions!

Be with us Mary, along the way; guide every step we take.

Lead us to Jesus your loving Son

Come with us Mary, come.

Sr. Esme da Cunha Fdccc, Prayagraj



The Cross: A Path to Holiness



Nick Vujicic was born without arms and legs. He faced enormous challenges growing up, but his Christian faith eventually became central to his life. Today he travels internationally

as a motivational speaker and evangelist, sharing a message of hope and faith. His physical limitation did not become the end of his story; he transformed his suffering into a way of encouraging millions of people. "What looked like a cross became the very instrument through which God allowed him to bring hope to others."

There is a strange paradox at the heart of Christianity: the sign of defeat has become the sign of victory, and what the world sees as weakness has become, in the eyes of faith, the doorway to holiness. Jesus does not promise His followers a life without suffering. Instead, He says: "If anyone would come after me, let him deny himself and take up his cross daily and follow me" (Luke 9:23). The cross, therefore, is not merely something we look at upon the walls of our churches. It is something we are invited to carry in our daily lives.

In the same way the saints understood this mystery deeply. Their lives show that

holiness is rarely formed in comfort alone. It is formed through sacrifice, patience, disappointment, persecution, illness, loneliness, obedience, detachment, forgiveness, and the daily surrender of our own will to God. Any saint's journey to holiness was not effortless. They experienced interior struggles, difficulties in prayer, opposition, illness, and misunderstandings. Yet they persevered. The most important crosses is sometimes simply remaining faithful when we do not feel God's presence. There are periods in spiritual life when prayer seems dry, when God appears distant, and when our efforts seem to produce little fruit. Such moments can tempt us to give up. But perseverance itself can become prayer. A person who continues to pray when prayer feels difficult is already carrying a cross. A person who continues to love when love is not returned is carrying a cross. A person who continues to do good when nobody notices is carrying a cross. Holiness is often hidden in precisely these ordinary acts of fidelity.

Perhaps one of the hardest crosses is forgiveness. When someone hurts us, our natural instinct may be to demand justice, defend ourselves, or make the other person suffer in return. Christ gives another way. From the Cross He prays for those who crucify Him. It does not necessarily mean allowing

someone to continue harming us. Justice and appropriate boundaries remain important. But forgiveness means refusing to allow another person's wrongdoing to become the master of our heart. This may be one of the most difficult forms of dying to self. The Cross teaches us: I do not have to repay hatred with hatred. I can place justice in God's hands while choosing not to become what wounded me.

Dietrich Bonhoeffer, the German Christian theologian and martyr, reminds us that following Christ necessarily involves the surrender of self. In *The Cost of Discipleship*, he describes the call of Christ as a call to "come and die." For Bonhoeffer, this does not mean seeking suffering for its own sake, but allowing the old self - our pride, selfish desires, need for control, and resistance to God's will - to die so that Christ may live more fully in us.

St John of the Cross teaches us another dimension of the Cross: detachment. His writings describe the soul's journey toward union with God as a passage through darkness. God gradually purifies the human heart from its excessive attachment to created things, including even our own spiritual consolations. This can be painful. We often want God to give us what we want. Holiness teaches us to desire, above all, God Himself. We often pray: "Lord, take this cross away." There is nothing wrong with such a prayer. Jesus Himself prayed in Gethsemane. But there is another prayer: "Lord, if this cross remains, give me the grace to carry it with love." That second prayer can transform the heart. The Cross does not always look like Calvary. Ultimately, the Cross leads us not to defeat, but to the hope of resurrection and the fullness of life with God.

Sr. Smitha FCC, Lucknow



The Girl Child - God's Feminine Image



The girl child is one of God's most beautiful creations, reflecting His love, compassion, wisdom, and grace. Every girl is born with unique talents, dreams, and the potential to make the world a better

place. She is not only a daughter but also a future mother, leader, teacher, scientist, artist, and nation-builder. Recognizing the girl child as God's own feminine image reminds us that she deserves equal love, respect, education, and opportunities. Throughout history, women have played remarkable roles in shaping families and societies. From nurturing homes to leading nations, their contributions have been invaluable. Yet, in many parts of the world, girls still face discrimination, child marriage, lack of education, and violence. Such practices go against the values of love, justice, and equality that God teaches.

Education is the greatest gift we can offer to a girl child. An educated girl grows into a confident woman who can uplift her family and contribute to society. When girls are encouraged to dream and achieve, communities become healthier, stronger, and more prosperous. Parents, teachers, and society have a shared responsibility to protect every girl, encourage her talents, and ensure her safety and dignity. We must replace prejudice with respect and provide an environment where every girl can flourish without fear. A girl child is not a burden but a blessing. She carries within her the divine qualities of kindness, strength, creativity, and hope. By honoring and empowering every girl, we honor God's own feminine image and build a future filled with justice, peace, and compassion. Every girl child born into this world is a sacred masterpiece. She carries a profound spiritual blueprint, reflecting the gentle, creative, and nurturing aspects of the divine. Across history and diverse cultures, the

feminine image of God represents wisdom, renewal, and unconditional love. Embracing the girl child means recognizing this inherent holiness within her.

- **Intuitive insight:** She often perceives emotional undertones and unvoiced needs.
- **Harmonious leadership:** Her approach favours collaboration over dominance.
- **Spiritual purity:** Her early innocence reflects an untainted divine source

To mistreat or undervalue a girl child is to deface a sacred image. Society thrives only when her dignity is fiercely protected. Honouring her means providing equal opportunities to learn, grow, and lead without fear.

The girl child is not merely a member of the next generation; she is a present manifestation of the divine. By viewing her through this spiritual lens, we elevate our treatment of her from basic human rights to sacred duty. When we celebrate the girl child, we honour the very image of the divine creator.

Conclusion: Every girl child is precious in the eyes of God. Let us value, educate, protect, and empower every daughter, allowing her to shine with confidence and fulfill her God-given purpose. A society that respects its girls is a society that truly reflects God's love.

Sr. Rinki Nayak, FMA,
Bareilly



Mother of Sorrows Knows Our Struggles



"A sword will pierce your own soul too." (Luke 2:35)

There are moments in life when words fail. We smile before others while carrying silent wounds within. We kneel in prayer, yet our hearts remain heavy with unanswered questions. We wonder if anyone truly understands the weight we bear.

At such moments, the Mother of Sorrows gently whispers, **"I know."**

She does not know suffering because she merely witnessed it. She knows it because she lived it. She watched the Child she carried with immeasurable love become the Man rejected, mocked, scourged, and crucified. She heard every insult, saw every wound, and stood beneath the Cross when others walked away. She could not stop the nails, erase the pain, or change the Father's plan. She remained-loving, believing, and hoping.

Mary teaches us that faith is not the

absence of tears. Faith is choosing to stand when everything within us wants to run.

Many of us carry crosses that no one sees. A broken relationship. A lonely vocation. A burden of responsibility. Financial worries. Illness. Disappointments. We often ask, "Lord, why me?"

Mary may not answer every "why," but she lovingly shows us the "how."

She shows us how to trust when we cannot understand.

How to forgive when our hearts are wounded. How to remain faithful when prayers seem unanswered.

How to believe that Good Friday is never the end of the story.

The Mother of Sorrows never promised a life without suffering. She promised her presence within it.

Perhaps the greatest miracle of Mary's sorrow is that it never made her bitter. Pain could not steal her tenderness. Grief could not extinguish her hope. Darkness could not separate her from God. Instead, every sorrow



enlarged her heart, making room for every suffering child who would one day seek refuge in her.

That is why we confidently call her **our Mother**.

She understands the tears we hide. She notices the burdens we never speak about. She gathers the broken pieces of our hearts and quietly places them before Jesus.

When we feel abandoned, she reminds us that the Cross always leads to Resurrection.

When we feel weak, she reminds us that God's strength is revealed in our weakness.

When we feel that our suffering has no meaning, she points us to Calvary, where love transformed suffering into salvation.

Today, if your heart is weary, do not carry your cross alone. Place it into the hands of the Mother of Sorrows. She will not remove

every burden immediately, but she will walk beside you, strengthening your faith with the same courage that kept her standing beneath the Cross.

Our Lady of Sorrows reminds us that God often writes His most beautiful stories with the ink of our tears. What seems like an ending may only be the beginning of a greater resurrection.

So when life feels too heavy, look at the Mother of Sorrows. In her eyes you will not find despair -you will find hope. In her silence you will hear courage. In her pierced heart you will discover a love that understands your own. Walk with her, Pray with her, Trust with her. For the Mother who stood at Calvary will never leave her children alone on their journey to Easter.

Sr. Lavina Dabre MSI,
Motinagar, Haldwani



Women in the Church

A Theological and Personal Reflection



Introduction: The subject 'role of women in the Church' has generated considerable discussion, reflection, and sometimes disagreement among Christians. Different traditions interpret

Scripture in different ways regarding leadership, teaching, ministry, and authority. Yet beyond the debates over particular roles, there is a deeper theological truth that should guide the church: women and men are equally created in the image of God, equally valued by God, and equally called to participate in the life and mission of the Church. Reflecting on women's role in the church therefore, invites us to consider not only what women are permitted to do, but also how the church

recognizes their dignity, gifts, calling, and witness. This article reflects on these nuances from a theological and personal perspective; it draws concluding remarks that insist on a meaningful space for females in the Church.

Theological Reflections: Genesis 1:27 of the Bible affirms clearly the equality and dignity of females, i.e., they also bear the 'image of God' fully. This means that a females' worth does not depend upon her position, marital status, education, or ability to hold a particular office; her dignity comes from God. This provides an important theological foundation for understanding the place of females in the church.

Jesus concretely demonstrates the dignity and equality of females, underlined in the OT. He treats women with dignity, respect, and equality; he welcomes them as disciples and responds profoundly to their faith. Mary's



(Lk 10:38-42) episode shows that Jesus valued women's desire to learn and grow in their understanding of God.

In response to Jesus' 'gift' women remain faithful to Jesus even at the cross which made them the first witnesses of His resurrection. The task entrusted to Mary Magdalene – to share the news of the risen Christ – shows the important role of women in proclaiming the Gospel. In the Early Church, they are seen serving actively through teaching, ministry, hospitality, mission, and leadership, as demonstrated in the examples of Phoebe and Priscilla.

Personal Reflections: Perhaps a misreading of the 1 Cor 14:34-35 and 1 Tim 2:11-12, has led to the restriction of women from certain leadership and teaching roles in the Church. I honestly believe that this difference should be approached with humility, which may guide the Church to recognize that females are also equal and valuable members of Christ's body (Gal 3:22) – 'all are one in Christ Jesus'. This does not mean that men and women become identical or that every distinction between them disappears. Rather, it emphasizes their equal standing before God and their equal participation in salvation. When the Church is a community of 'disciples', women are encouraged to discover and use the gifts God has given them.

Concluding Remarks:

- Even when their contributions are not

(पृष्ठ 4 का शेष)



तैयार किया, हमें विश्वास, नम्रता और साहस के साथ ईश्वर की योजना को आत्मसमर्पण करना सिखाएं। हमारा जीवन, उनके जीवन की तरह, ऐसे साधन बनें जिनके माध्यम से मसीह हमारे परिवारों, हमारे समुदायों और हमारी दुनिया में प्रवेश कर सकें। “देखिए, मैं प्रभु की दासी हूँ; आपका कथन मुझ में पूरा हो जाये।” (लूकस 1:38)।

publicly recognized, women play a vital role in the Church through faithful service, care, prayer, teaching, and ministry. The church is called to challenge cultural biases, value women's voices, and recognize their God-given gifts as equally important to the body of Christ. This is to realize and materialize the fact that Christian ministry is not about power or position, but about serving others in a way that reflects Christ's love and humility.

- Listening' to women has greater importance in the Church. The Church is strengthened when women are given meaningful opportunities to speak about their experiences, faith, struggles, and understanding of the Scripture. Besides, listening to women deepens the understanding of the 'body of Christ'; or else, the Church risks seeing only part of God's work.
- Women have always played an important and meaningful role in God's work and are an essential part of the story and mission of Christianity. The church should honour women with dignity, protect their rights, encourage their gifts, and address theological differences with humility, prayer, and respectful dialogue.
- The Church is more faithful to Christ when it recognizes women as valued participants in God's mission, not merely as supporters of ministry.

Sr. Helen UFS,
Nawabganj

धन्य कुंवारी मरियम का जन्मोत्सव हम सभी में इस विश्वास को नवीनीकृत करें कि ईश्वर के पास हर जीवन के लिए एक उद्देश्य है और जब हम खुद को उनके हाथों में सौंपते हैं, तो हमारा साधारण जीवन भी उनकी असाधारण योजना का हिस्सा बन सकता है।

† इग्नेशियस डिसूजा,
धर्माध्यक्ष

Take Up Your Cross and Follow Me



Jesus says, "Whoever wants to be my disciple must deny themselves and take up their cross and follow me." (Matthew 16:24)

These words of Jesus are not merely an invitation; they are a call to a life of faith, courage, sacrifice, and commitment. To follow Christ means more than simply believing in Him. It means choosing His way even when the journey is difficult.

The cross represents the struggles, sacrifices, responsibilities, and challenges that we encounter in life. Every person has a cross to carry. Sometimes it may be sickness, failure, loneliness, misunderstanding, disappointment, family difficulties, or the responsibility of caring for others. Jesus does not promise that His followers will have a life without difficulties. Instead, He promises to walk with us through them.

To take up our cross means accepting our responsibilities with faith and patience. It means forgiving when we are hurt, remaining faithful when we are discouraged, serving others when it is inconvenient, and continuing to do what is right even when no one appreciates us. Jesus Himself carried the cross before us. He accepted suffering out of love and gave His life for the salvation of humanity. Therefore, when we carry our own crosses with love and trust in God, our suffering can become an offering and a path to spiritual growth.

To follow Jesus means to imitate His life. Jesus teaches us humility, compassion, forgiveness, obedience, and love. We are called not only to carry our cross but also to

help others carry theirs. A kind word, a helping hand, a forgiving heart, or a simple act of service can make another person's cross lighter.

The cross may sometimes seem heavy, but we are never alone. God gives us the grace and strength we need each day. When we feel weak, we can look to Jesus and remember that He understands our struggles. Therefore, let us not run away from our crosses. Instead, let us embrace them with faith and courage. Let us trust that every cross carried with love can lead us closer to Christ.

Lessons from the Cross:

Love and Sacrifice – Jesus teaches us to love others selflessly and to be willing to sacrifice for them.

Forgiveness – Even in His suffering, Jesus forgave those who crucified Him. We too must learn to forgive others.

Patience and Endurance – The Cross teaches us to remain patient and strong during difficulties and suffering.

Obedience to God – Jesus accepted the Cross in obedience to His Father's will. We should trust and follow God's plan.

Humility – Jesus accepted humiliation and suffering without pride or complaint.

We are called to live humbly.

Hope and Victory – The Cross was followed by the Resurrection. It reminds us that suffering is not the end; with faith, hope and God's grace, victory is possible.

"Take up your cross, and follow Me." This is the invitation of Jesus to each one of us. May we have the courage to say, "Lord, I will follow You, wherever You lead me."

Sr. Theresa Antony,
Bethany Convent, Khatima



What are we 'TEACHING' India? (A Teachers' Day Special)



A few days ago, I went for an ultrasound as part of a routine check-up. While speaking to me, the doctor shared something that left me deeply disturbed. She said that a very large proportion of the people coming to her

diagnostic centre these days were being diagnosed with cancer. Then she added, almost helplessly, ***"I think one of the major causes is adulterated food."*** Her words stayed with me.

She spoke about the frightening ease with which food is being adulterated in our country - *from fruits and milk to everyday essentials* - and about how rules, regulations and inspections are often bypassed. What disturbed me even more was not merely the adulteration itself, but the **MINDSET** behind it!

A few days later, on Independence Day, we had a distinguished doctor and physiotherapist as our Chief Guest. During our conversation, he repeatedly said something that suddenly connected all the dots for me: ***"In India, from childhood, we seem to teach only one lesson: How to make money...How to become rich."***

Perhaps adulteration is not merely 'a food problem'. **Perhaps it is a 'values problem'.**

We adulterate milk when profit becomes more important than another person's health. We adulterate food when greed becomes stronger than conscience. We adulterate truth when convenience becomes more important than character. And sometimes, sadly, we even adulterate education when marks, ranks, jobs and salaries become more important than becoming good human beings.

Recently, while visiting a small town in the United Kingdom, I was struck by

something very different. There seemed to be a certain **purity in the products, gentleness in interactions, respect for rules, balance in life and a quiet sense of well-being.** People seemed to have time to breathe, to smile, to greet one another, to live - not merely to compete.

It made me wonder: **What kind of India are we educating our children to build?**

This Teachers' Day, perhaps we need to ask ourselves a more uncomfortable question than *"How well are my students performing?"*, We need to ask: ***"What kind of people are my students becoming?"***

Can our classrooms produce brilliant minds **without producing greedy hearts?**

Can we teach ambition **without teaching exploitation?**

Can we teach success **without making money the definition of success?**

Can we prepare children *not merely to earn a living, but to live a meaningful life?*

Perhaps the India of tomorrow will not be changed only by stricter laws, more inspections or harsher punishments. It will be changed when **conscience becomes stronger than greed.**

And that transformation would begin quietly - in a classroom.

*A teacher who would teach honesty when nobody is watching **will build INDIA.***

*A teacher who would teach respect for the environment **will build INDIA.***

*A teacher who would teach a child that another person's well-being matters **will build INDIA.***

*A teacher who would celebrate integrity more than achievement **will build INDIA.***

As Teachers, this Teachers' Day, **let us therefore broaden our curriculum...** Let us teach...*competence, but also conscience;*

ambition, but also accountability; success, but also service; rights, but also responsibility; how to earn, but also how to share; how to compete, but also how to care.

Because the India we dream of cannot be built merely by **better-qualified people**. It needs **better-educated people**. And perhaps the most important lesson we can teach our



St. Mother Teresa

The Saint of The Gutters



"Give your hands to serve and your hearts to love." – St. Mother Teresa

There was a woman who walked through the streets where many people chose not to look. She would stop where others hurried past. She would bend down where others were afraid to come near. When she found someone sick, abandoned, or forgotten, she did not first ask their name, their religion, or where they came from. She simply stayed. She would sit beside them, hold their hands, wipe their tears, clean their wounds, and make them feel that, even in their suffering, they had not been forgotten. She owned very little, yet she gave so much. She sought neither wealth nor recognition. Her treasure was found in the faces of the poor, the sick, the dying, and the abandoned. Wherever she went, hope seemed to follow. The world came to know her as Mother Teresa.

St. Teresa of Calcutta was a woman who allowed God to use her ordinary life for an extraordinary mission. Born in 1910. Mother Teresa arrived in India on January 6, 1929, landing in Calcutta (now Kolkata). She traveled there from Ireland as an 18-year-old novice with the Sisters of Loreto to begin her life as a missionary and teacher. But experienced a profound "call within a call" in 10th September 1946 to leave the convent and serve the poorest people in the city slums. In

children is beautifully simple: ***"Don't just become someone who makes a living. Become someone who makes it WORTH LIVING...for everyone."*** That could be the beginning of a healthier India, a kinder India - and *perhaps, a truly Educated India.*

Sr. Rekha Punia, UMI,
Greater Noida

1950, the Missionaries of Charity were officially established in Calcutta.

Core Spiritual Pillars

The Call Within a Call: Hearing Christ's plea on the cross, "I thirst," as an intimate summons to care for the destitute.

The Face of Christ: Viewing every homeless, hungry, or dying person not as a social problem, but as Jesus in physical form.

The Hidden Darkness: Enduring decades of a profound "dark night of the soul," where she felt the deep, silent absence of God yet chose to love in all the ways.

Mother Teresa understood the Gospel in a very practical way. Jesus says, *"Whatever you did for one of the least of these brothers and sisters of mine, you did for me."* -Matthew 25:40. For her, this was not simply a Bible verse. It was a way of life. She saw Christ in the dying person, the abandoned child, the person suffering from illness, the homeless person on the street forgotten by the society. In Oslo, when the world finally honored her with a noble peace prize, she did not allow the spotlight to remain on herself. The woman who had spent her life among the poorest of the poor accepted the honor not as a personal triumph, but as a recognition of those whom the world so often failed to see.

Today, the Missionaries of Charity continue the mission entrusted to them by Mother Teresa. The Sisters serve in 138 countries, with 754 missions and more than



5,000 Sisters, according to the congregation's current information. Their work includes caring for the sick and dying, abandoned children, homeless, people affected by leprosy, people with disabilities, who are unwanted and unloved. Their service is not limited to one country, one culture, or one religion. They serve people regardless of social class, color, creed, or religion. Their communities respond to the needs of the places where they live, offering practical and spiritual care to those who have little or no one else to help them. This is what makes the legacy of Mother Teresa so powerful. She did not simply leave behind buildings, institutions, or a famous name. She left behind a way of seeing people.

Growing Up in the Shadow of "Missionaries of Charity:

My Time with the Sisters of Mother Teresa: Since I was a child, home for me has not been just four walls, but the quiet corridors of a convent where the Sisters of Mother Teresa lived out their vocation every single day. I did not learn about the Missionaries of Charity from a book - but by watching the sisters wake before dawn, kneel in prayer, and then walk straight into the poorest, most forgotten corners of the city to serve. What I felt, growing up in that environment, was something I only understood slowly. As a child, I simply saw sisters in white saree with blue border caring for the sick, the abandoned, and the dying. As I grew older, I began to feel the weight and the beauty of what I was witnessing - that love, when it is real, does not ask questions before it serves. It does not check who deserves it first. What I learned from them is this: greatness is not found in grand plans but in small, faithful acts done with great love. I learned that dignity can be restored with a bath, a clean bandage, or simply someone's full attention. I learned that a life poured out for others is not a diminished life - it is a life multiplied.

This is the spirit Mother Teresa gave

the world. She once said that *"we are not called to do great things, but small things with great love."* She saw Christ hidden in "the poorest of the poor," and she taught her sisters and through them, taught me to see every suffering person as Jesus himself, disguised in what she called his "distressing disguise." This is where the Gospel comes fully alive. Christ tells us plainly: *"Whatever you did for one of the least of these brothers and sisters of mine, you did for me" (Mt 25:40).*

We may not be called to do exactly what Mother Teresa did. We may never run a home for the dying or care for hundreds of abandoned people. But every one of us has someone placed before us whom we can love. A family member who needs patience. A friend who needs someone to listen. A stranger who needs kindness. A person whom everyone else ignores. The question is not always, "How much can I do?" Sometimes the question is simply: *"Can I see Christ in the person standing before me?"* Mother Teresa began with something very small: one person, one act of love, one moment of service. And perhaps that is where God is asking us to begin too. Not by changing the whole world at once, but by changing one person's experience of the world through our love.

Because in the end, Mother Teresa's greatest lesson was beautifully simple: *"We do not need to be extraordinary to do God's work. We only need to be willing to love."* And when that love is given freely, quietly, and faithfully, even the smallest act can become a prayer. So, my challenge to you today is simple: you do not need a religious habit or a convent to live this out. Somewhere near you in your home, your workplace, your street there is someone who is lonely, sick, forgotten, or in pain. Mother Teresa's call was never reserved for nuns. It is for anyone willing to do small things with great love.

"The hunger for love is much more difficult to remove than the hunger for bread."
—St. Mother Teresa

Nisha John Masih, Bareilly

माँ मरियम : ईश्वर का अनुपम उपहार



“जब समय पूरा हुआ, तो ईश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो एक स्त्री से उत्पन्न हुआ” (गलातियों 4:4)।

मानव इतिहास में ईश्वर ने अनेक व्यक्तियों को अपनी उद्धार-योजना में सहभागी

बनाया। परन्तु उनमें सबसे विशिष्ट स्थान पवित्र कुँवारी मरियम का है। वे केवल प्रभु येशु मसीह की माता नहीं हैं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए ईश्वर के प्रेम, कृपा और उद्धार की जीवित निशानी हैं। काथलिक कलीसिया मरियम को इसीलिए ‘धन्य कुँवारी’, ‘ईश्वर की माता’ (Theotokos), ‘नई हेवा’, ‘कलीसिया की माता’ तथा ‘विश्वास की आदर्श शिष्या’ के रूप में सम्मान देती है। संत जॉन पॉल द्वितीय ने अपने विश्वपत्र Redemptoris Mater (1987) में लिखा है:

“मरियम उद्धार के रहस्य में केवल ऐतिहासिक पात्र नहीं हैं; वे आज भी विश्वासियों के जीवन में सक्रिय मातृ उपस्थिति रखती हैं और उन्हें मसीह के और निकट ले जाती हैं।”

अतः मरियम केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की आशा हैं।

धर्मग्रंथ हमें बताता है कि संसार की रचना से पूर्व ही ईश्वर ने मानव उद्धार की योजना बना ली थी। इस योजना के केन्द्र में उनका पुत्र येशु मसीह था और उस योजना में एक स्त्री का विशेष स्थान निर्धारित था। Catechism of the Catholic Church (CCC 488) कहती है: “ईश्वर ने अपने पुत्र की माता बनने के लिए एक स्त्री को चुना, जो अनुग्रह से परिपूर्ण थी” (लूकस 1:28 में स्वर्गदूत गब्रिएल मरियम को संबोधित करता है “हे अनुग्रह से परिपूर्ण, प्रभु तुम्हारे साथ है।”) “अनुग्रह से परिपूर्ण” शब्द दर्शाता है कि मरियम को ईश्वर ने अपने विशेष उद्देश्य के लिए तैयार किया था। वे ईश्वर की कृपा से चुनी गई। स्वर्गदूत के संदेश के उत्तर में मरियम ने कहा “देख, मैं प्रभु

की दासी हूँ; तेरे वचन के अनुसार मेरे साथ हो” (लूकस 1:38)। यह केवल एक उत्तर नहीं था; यह सम्पूर्ण मानव इतिहास के लिए विश्वास और आज्ञाकारिता की घोषणा थी। CCC 494 कहती है: “अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ मरियम ने ईश्वर की उद्धार योजना को स्वीकार किया।”

संत इरेनियस (दूसरी सदी) ने इस घटना की तुलना हेवा से करते हुए कहा- “हेवा की अवज्ञा की गाँठ मरियम की आज्ञाकारिता से खुल गई।” इस कारण कलीसिया मरियम को नई हेवा (New Eve) कहती है। जहाँ पहली हेवा ने पाप का मार्ग खोला, वहीं नई हेवा मरियम ने उद्धार का द्वार खोल दिया। सन् 431 ई. में एफेसुस की महासभा (Council of Ephesus) ने घोषणा की कि मरियम वास्तव में Theotokos अर्थात् ‘ईश्वर की माता’ हैं। यह घोषणा मरियम की महिमा के लिए नहीं, बल्कि मसीह के दिव्य व्यक्तित्व की रक्षा के लिए की गई थी। “जिसे मरियम ने गर्भ में धारण किया और जन्म दिया, वह ईश्वर का सनातन पुत्र है। इसलिए मरियम वास्तव में ईश्वर की माता हैं।” इस प्रकार संसार को सबसे महान उपहार उद्धारकर्ता येशु मरियम के माध्यम से प्राप्त हुआ।

एलिजाबेथ ने मरियम से कहा, “धन्य है वह जिसने विश्वास किया” (लूकस 1:45)। मरियम ने अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना किया-बेतलेहेम की निर्धनता, मिश्र का पलायन, नाजरेत का साधारण जीवन, और अन्ततः क्रूस का दुःख। फिर भी उनका विश्वास कभी डगमगाया नहीं। Lumen Gentium (अध्याय VIII, अनुच्छेद 58) कहता है: “मरियम ने विश्वास की तीर्थयात्रा को अन्त तक पूरा किया और अपने पुत्र के साथ एक होकर दुःख सहा।”

आज जब संसार निराशा और अनिश्चितता से घिरा है, मरियम हमें विश्वास की स्थिरता का पाठ पढ़ाती हैं। संत पिता फ्राँसिस कहते हैं- “मरियम वह माता हैं जो सुनती हैं, स्वागत करती हैं और सेवा करती हैं। उनका जीवन हमें बताता है कि महानता प्रभुत्व में नहीं, बल्कि प्रेमपूर्ण सेवा में है” (Evangelii Gaudium, 286)।

क्रूस पर येशु ने कहा, “हे स्त्री, देख, यह तेरा पुत्र है... देख, यह तेरी माता है” (योहन 19:26-27)। इन शब्दों के साथ मरियम सम्पूर्ण कलीसिया की माता बन गई। CCC 963 कहती है- “मरियम मसीह के शिष्यों की माता हैं, क्योंकि उन्होंने विश्वास और प्रेम से विश्वासियों के जन्म में सहयोग दिया।” इसी सत्य के आधार पर संत पौलुस षष्ठम ने द्वितीय वेटिकन महासभा के दौरान मरियम को आधिकारिक रूप से “Mother of the Church” (Ecclesiae Mater) घोषित किया। प्रेरित चरित्र 1:14 में मरियम प्रेरितों के साथ पवित्र आत्मा की प्रतीक्षा में प्रार्थना करती दिखाई देती हैं। इस प्रकार वे प्रारम्भिक कलीसिया की प्रार्थनामयी माता बन जाती हैं। संत जॉन पॉल द्वितीय लिखते हैं- “पेंतेकोस्त के समय मरियम की मौन उपस्थिति कलीसिया के जन्म में उनकी मातृत्व की निरन्तरता को प्रकट करती है।”

माँ मरियम वास्तव में संसार के लिए ईश्वर का अनुपम उपहार हैं। उन्होंने अपने विश्वास, विनम्रता और आज्ञाकारिता द्वारा उद्धारकर्ता को संसार में आने दिया। वे आज भी कलीसिया की माता, विश्वासियों की सहायक और आशा की ज्योति हैं। मरियम का सम्पूर्ण जीवन हमें अपने पुत्र येशु मसीह की ओर ले जाता है। इसलिए उनका सम्मान करना अंततः मसीह का ही सम्मान करना है।

जैसा कि Lumen Gentium (66) सिखाता है, “मरियम का सम्मान सदैव मसीह की आराधना की ओर ले जाता है, क्योंकि उन्हीं के कारण मरियम धन्य कहलाती हैं।” हम अपने परिवारों, समुदायों और कलीसिया में मरियम के गुणों विश्वास, विनम्रता, सेवा, पवित्रता और आज्ञाकारिता को अपनाएँ, ताकि हमारा जीवन भी संसार के लिए ईश्वर के प्रेम का साक्षी बन सके।

एलिजाबेथ पैट्रिक, रानीखेत



उन्हें उड़ने दो



सुचेतना समाज सेवा केंद्र की महत्वपूर्ण परियोजनाओं में से एक ‘उड़ान’ है, जिसे अजीम प्रेमजी फाउंडेशन का सहयोग प्राप्त है। इस परियोजना का प्राथमिक उद्देश्य किशोरियों और बच्चों में आत्मविश्वास

जगाना है, जिससे वे अपनी क्षमताओं को पहचान सकें, अपने भविष्य के सपने देख सकें और उन्हें पूरा करने की दिशा में कदम बढ़ा सकें।

जिंदगी का एक बेहद खूबसूरत अंदाज होता है। यह हमें अक्सर उन जगहों पर वापस ले आती है जिन्होंने कभी हमारी यात्रा को छुआ होता है। 15 लंबे वर्षों के बाद, परिस्थितियां मुझे फिर उसी धर्मप्रांत और उसी जिले, पीलीभीत के उन्हीं गांवों में वापस ले आईं। लेकिन इस बार मैं एक अलग उद्देश्य के साथ आई थी: ‘उड़ान’ परियोजना को समझने और यह देखने कि इतने वर्षों में लोगों का जीवन कितना बदला है।

कई सकारात्मक बदलावों को देखना दिल को छू

लेने वाला था। लोगों के रहन-सहन की स्थिति में सुधार हुआ है, वातावरण बेहतर हुआ है, स्कूलों की संख्या बढ़ी है और अधिक लड़कियां अपनी शिक्षा जारी रख रही हैं। कई लड़कियां इंटरमीडिएट तक पढ़ाई कर रही हैं, जबकि कुछ उच्च शिक्षा भी प्राप्त कर रही हैं। ये बदलाव आशा और प्रगति का प्रतीक हैं।

लेकिन, इन दृश्यमान बदलावों के भीतर एक सच्चाई आज भी लगभग वैसी ही है – समाज का रवैया और सोच।

कई माता-पिता के मन में अपनी बेटियों को लेकर आज भी गहरा डर बना हुआ है। कई परिवारों के लिए, इस डर का सबसे आसान और सुरक्षित समाधान आज भी शादी ही है। हालांकि शिक्षा ने लड़कियों के लिए कुछ दरवाजे जरूर खोले हैं, लेकिन सामाजिक उम्मीदें अक्सर उनके फैसलों को सीमित कर देती हैं।

प्रशिक्षणों और लड़कियों के साथ बातचीत के दौरान जिस बात ने मुझे सबसे ज्यादा चिंतित किया, वह यह



थी कि उनमें से कईयों के जीवन का कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं है। और अगर उनका कोई सपना है भी, तो वह अक्सर उनके माता-पिता द्वारा तय किया गया होता है।

इस बात ने मुझे एक सरल लेकिन प्रभावकारी विचार पर मंथन करने के लिए प्रेरित किया: “बच्चे के पंख काटने के लिए नहीं होते; वे तो यह खोजने में उसकी मदद करने के लिए होते हैं कि वह कितनी ऊंची उड़ान भर सकती है।”

कभी-कभी, इससे पहले कि कोई लड़की उड़ना सीखे, समाज उसे तय करके बता देता है कि उसे कितनी दूर जाने की अनुमति है।

यहीं पर ‘उड़ान’ परियोजना का महत्व पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है। यह परियोजना केवल प्रशिक्षण देने तक सीमित नहीं है। यह आत्मविश्वास का निर्माण करने, जागरूकता फैलाने और नई संभावनाओं के द्वार खोलने के बारे में है। प्रशिक्षणों, एक्स्पोज़र विज़िट्स (व्यावहारिक दौरों), व्यावसायिक कौशल विकास और सार्थक बातचीत के माध्यम से ‘उड़ान’ किशोरियों को अपनी ताकतों को पहचानने और खुद पर विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

‘उड़ान’ शब्द का अर्थ ही हवा में तैरना या उड़ना है। और हर लड़की इस बात की हकदार है कि उसे सपने देखने, अपने पंख फैलाने और उड़ान भरने का अवसर मिले। “भविष्य उनका है जो अपने सपनों की सुंदरता में विश्वास रखते हैं।” –एलेनोर रूजवेल्ट।

लेकिन सिर्फ सपने देखना ही काफी नहीं है। बदलाव तब संभव होता है जब अंदर से प्रेरणा हो और परिवार व व्यवस्था का सहयोग मिले। एक लड़की में सपना देखने का साहस हो सकता है, लेकिन उसे ऐसे माता-पिता की भी जरूरत होती है जो उस पर विश्वास करें, ऐसे शिक्षकों की जरूरत होती है जो उसका हौसला बढ़ाएं, और एक ऐसे समाज की जरूरत होती है जो समान अवसर प्रदान करे।

सुचेतना प्रत्येक व्यक्ति के समग्र विकास के लिए

ऐसा माहौल बनाने के लिए ईमानदार प्रयास कर रही है। सरकार ने भी लड़कियों और बच्चों को एक बेहतर भविष्य देने के समर्थन में कई योजनाएं, छात्रवृत्तियां और कार्यक्रम शुरू किए हैं। ये पहल सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। हालांकि, जिस बात पर अभी भी ध्यान देने की जरूरत है, वह है समाज की मानसिकता।

हमें एक ऐसा माहौल बनाने की जरूरत है जहां लड़के और लड़की को एक समान समझा जाए; जहां लड़की की शिक्षा को लड़के की शिक्षा जितना ही महत्व दिया जाए; जहां उसके सपनों को तय करने के बजाय उन्हें सुना जाए; और जहां शादी को माता-पिता के डर का एकमात्र जवाब न माना जाए। हर बच्चे को सपने देखने का अधिकार है। हर युवा को जीवन में अपनी दिशा चुनने का अधिकार है। और हर लड़की इस अवसर की हकदार है कि वह अपने पंख फैला सके।

“यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं, तो आप केवल एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं। लेकिन यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं, तो आप पूरे राष्ट्र को शिक्षित करते हैं।” इसलिए ‘उड़ान’ की यात्रा केवल व्यक्तिगत लड़कियों के जीवन को बदलने के बारे में नहीं है। यह सोच को बदलने, परिवारों को मजबूत करने और धीरे-धीरे पूरे समुदाय का कायाकल्प करने के बारे में है।

15 साल बाद इन गांवों में लौटने पर, मैं देख सकती थी कि बदलाव की शुरुआत तो हो चुकी है। लेकिन सफर अभी पूरा नहीं हुआ है। हमारे सामने चुनौती यह सुनिश्चित करने की है कि आने वाली पीढ़ी की लड़कियों को सिर्फ जीने की इजाजत ही न मिले-बल्कि उन्हें सपने देखने, उड़ने और आसमान को छूने का आत्मविश्वास, आजादी और सहयोग मिले।

‘उड़ान’ लड़कियों को केवल पंख नहीं दे रहा है; यह उन्हें यह खोजने में मदद कर रही है कि पंख तो उनके पास पहले से ही हैं।

सि. नेन्सी रोड्रिगस DHM,
अमरिया

शिक्षकों के सम्मान में



जब हम शिक्षकों के बारे में सोचते हैं, तो हमारे दिमाग में एक ऐसे व्यक्ति की छवि बनती है जो रोज़ हमारी कक्षा में आते हैं, हमें पढ़ाते हैं और फिर चले जाते हैं और यही सिलसिला रोज़ चलता रहता है। ज्यादातर लोगों के लिए, शिक्षक की परिभाषा यहीं तक सीमित होकर रह गई है। लेकिन यह एक गलत धारणा है जो हमने अपने दिमाग में बना ली है।

प्राचीन काल से ही गुरु-शिष्य की परंपरा चली आ रही है और यह हमेशा जारी रहेगी। भले ही शिक्षा प्रणाली में आए बदलावों के कारण इस परंपरा में कुछ बदलाव आए हों, लेकिन इसका उद्देश्य और इसकी आत्मा आज भी वही है। आजकल, यह परंपरा केवल हमारे विद्यालयों तक ही सीमित होकर रह गई है।

एक शिक्षक निस्संदेह हर छात्र के जीवन में एक अनोखी और अमूल्य भूमिका निभाता है। बच्चे कच्ची मिट्टी की तरह होते हैं, लेकिन एक शिक्षक ही उन्हें ताराशता है, आकार देता है और उन्हें एक मूल्यवान रूप में ढालता है।

जब एक शिक्षक कक्षा में प्रवेश करता है, तो वह अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन की सभी चिंताओं, समस्याओं और दुखों को बाहर ही छोड़ देता है। अपने सामने बैठे बच्चों को देखकर, वे अपना पूरा ध्यान अपने छात्रों पर केंद्रित कर देते हैं और बड़ी जिम्मेदारी व कर्तव्यनिष्ठा के साथ उनके भविष्य को संवारने के महान कार्य में पूरी तरह जुट जाते हैं।

हर बच्चा शिक्षक को एक अलग दृष्टिकोण से देखता है। एक शिक्षक सभी छात्रों को समान दृष्टि से देखता है और उन्हें समान ज्ञान, प्रेम, देखभाल और मार्गदर्शन प्रदान करता है। पूरे साल इस तरह की समानता और समर्पण बनाए रखना निश्चित रूप से कोई आसान काम नहीं है। और जो व्यक्ति ऐसा असाधारण कार्य करता है, वह निश्चित रूप से प्रशंसा का पात्र है।

दुर्भाग्य से, आजकल बहुत से बच्चे अपने शिक्षकों का उस तरह से सम्मान नहीं करते जैसा पिछली पीढ़ियों के बच्चे किया करते थे। सच्चा सम्मान दिल से आता है; जब हम किसी का दिल से सम्मान करते हैं, तो हमें इसे दिखाने के लिए किसी दबाव की आवश्यकता नहीं होती। दुख की बात यह है कि सम्मान की यह सच्ची भावना आज कई बच्चों में कम होती दिख रही है।

कुछ बच्चे तो अपने शिक्षकों को केवल एक सेवक समझने की भूल करने लगते हैं, जिन्हें लगता है कि उन्होंने विद्यालय का शुल्क देकर रख लिया है। लेकिन उन्हें हमेशा एक बात याद रखनी चाहिए शुल्क से शिक्षा तो खरीदी जा सकती है, लेकिन किसी शिक्षक का समर्पण, ज्ञान, धैर्य और आशीर्वाद कभी नहीं खरीदा जा सकता।

शिक्षक केवल वह नहीं है जो हमें पढ़ाता है, बल्कि शिक्षक वह है जो हमें वह बनने में मदद करता है जो हम वास्तव में बनने के योग्य हैं। इसलिए आइए हम अपने शिक्षकों का सम्मान करें, उनके प्रयासों की सराहना करें और अपने जीवन में उनके अतुलनीय योगदान को कभी न भूलें।

ऋतिक साहनी,
सेंट एंथनी इंटर कॉलेज,
ज्योलीकोट

बेटी बोझ नहीं, उड़ान है



बेटी हूँ मैं, मुझे समझो, मेरे भी अरमान हैं
मेरी हँसी में खुशियाँ हैं, मेरी आँखों में जहान है।
जीवन मेरा आसान नहीं, फिर भी दिल में जान है
बेटी होना कमजोरी नहीं, ये मेरी पहचान है।

पापा जैसा प्यार मिले, हर रिश्ता वैसा हो
जहाँ सम्मान मिले मुझे, हर दिल में उजाला हो।
ना डर हो, ना रोक-टोक, ना कोई बंधन भारी हो
हर बेटी अपने सपनों की खुद मालिक और अधिकारी हो।

मैं किसी पर बोझ नहीं, मैं खुद अपनी ताकत हूँ,
अपने फैसले लेने वाली, अपने सपनों की हिम्मत हूँ।
मुझे पंख दो, राह नहीं-मेरी उड़ान को आसमान दो
मैं जो बनना चाहूँ जीवन में, बस उतना अधिकार दो।
बेटी को बचाना ही नहीं, उसे पढ़ाना भी है
उसके सपनों को समझकर, आगे बढ़ाना भी है।
वो घर की शान भी है और देश की पहचान है
बेटी को आजादी देना ही सच्चा सम्मान है।

कु0 सांघी पवार, काशीपुर



समाचार दर्शन



पुरोहिताई परिधान ग्रहण समारोह

प्रयागराज: 4 अगस्त का दिन हमारे लिए हर्ष, कृतज्ञता तथा ईश्वर की असीम कृपा का अनुभव कराने वाला एक अविस्मरणीय दिवस रहा। इस दिन संत योसेफ क्षेत्रीय गुरुकुल में आयोजित पवित्र यूखरिस्तीय बलिदान के दौरान कुल 24 धर्मभाइयों ने परिधान (Cassock) ग्रहण किया। इनमें बरेली धर्मप्रांत के चार भाई आकाशदीप लकड़ा, नरेश बारिया, जितेंद्र कुमार एवं विजेथ रोड्रिग्स ने भी इस पवित्र परिधान को धारण कर पुरोहिताई जीवन की ओर अपनी यात्रा के एक महत्वपूर्ण चरण में प्रवेश किया। आशीर्वाद के पश्चात् हमें प्रेरित किया गया कि यह परिधान केवल बाहरी वेशभूषा नहीं, बल्कि पवित्रता, समर्पण, प्रार्थनामय जीवन, सादगी और मसीह के प्रति पूर्ण निष्ठा का प्रतीक है। समारोह के अंत में सभी नव-परिधानधारी भाइयों को शुभकामना-पत्र एवं एक-एक पौधा भेंट किया गया। उन्हें उस पौधे को रोपित कर आगामी चार वर्षों तक उसकी देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित किया गया, जो उनके पुरोहिताई बुलावे की निरंतर वृद्धि, दृढ़ता और फलदायिता का सुंदर प्रतीक है।

भाई नूतन बीरो, प्रयागराज



विशाल रोजगार मेला 2026

बरेली: राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं बरेली धर्मप्रांत ICYM अध्यक्ष धर्माध्यक्ष इग्नेशियस डिसूजा की स्वीकृति एवं मार्गदर्शन में, ICYM बरेली द्वारा 31 जुलाई 2026 को बिशप कॉनराड सीनियर सेकेंडरी विद्यालय, जूनियर विंग, बरेली में प्रातः 9:30 बजे से दोपहर 2:30 बजे तक विशाल रोजगार मेला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन ICYM लखनऊ एवं ICYM मेरठ के सहयोग से तथा Don Bosco Job Placement Network India और Bright Futures के साथ सहभागिता में किया गया। रोजगार मेले का मुख्य उद्देश्य था: “अपने करियर का निर्माण करें, अपने भविष्य को आकार दें।” इस आयोजन का उद्देश्य युवाओं को रोजगार के विभिन्न अवसरों से परिचित कराना, नियोक्ताओं से सीधे संवाद का अवसर प्रदान करना, करियर संबंधी मार्गदर्शन देना तथा रोजगार प्राप्त करने के लिए एक उपयुक्त मंच उपलब्ध कराना था। इस रोजगार मेले में लगभग 80 उम्मीदवारों ने भाग लिया और विभिन्न कंपनियों के प्रतिनिधियों एवं नियोक्ताओं से बातचीत की। इस आयोजन के माध्यम से युवाओं को विभिन्न करियर विकल्पों एवं रोजगार के अवसरों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। इस पहल ने रोजगार की तलाश कर रहे युवाओं और नियोक्ताओं के बीच की दूरी को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा युवाओं को अपने उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कई उम्मीदवारों को आगे की चयन प्रक्रिया के लिए चिन्हित भी किया गया। धर्माध्यक्ष के मार्गदर्शन में ICYM बरेली द्वारा Don Bosco Job Placement Network India, Bright Futures के सहयोग से की गई यह पहल युवा सशक्तिकरण और रोजगार के क्षेत्र में एक सार्थक एवं महत्वपूर्ण कदम साबित हुई।

सुश्री स्वेता बेंजामिन DYLA, बरेली



वृद्धों का सम्मान

बैलपड़ाव: दिनांक 26 जुलाई 2026 (रविवार) को बैलपड़ाव में, दादा-दादी एवं नाना-नानी का आदर सम्मान करते हुए वृद्ध दिवस मनाया गया। प्रातः 8:00 बजे परमप्रसाद की आराधना में सभी वृद्धों ने भक्तिभाव से भाग लिया तत्पश्चात् सभी वृद्धों ने हाथों में फूल लिए जुलूस के साथ वेदी के सामने अर्पण किया और मिस्सा बलिदान में भाग लिया। इस अवसर पर पल्ली पुरोहित फा. हेनरी मेन्डोन्सा और फा. फैंलिक्स लोबो ने मिस्सा बलिदान चढ़ाया। पूजनविधि की तैयारी युवाओं एवं महिला मंडल के द्वारा की गई। 18 वृद्ध लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। मिस्सा के दौरान पल्ली पुरोहित ने अपने प्रवचन में बताया कि संत जोवाखिम और अन्ना माता-पिताओं के लिए अनुकरणीय व्यक्ति के रूप में काम करते हैं और दोनों ईश्वर की माँ के प्रति समर्पण के लिए सम्मानित हैं। फादर ने सभी बुजुर्गों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए विशेष प्रार्थना की। अंत में जलपान व लघु पुरस्कार वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

निर्मला जोसफ, बैलपड़ाव



उद्देश्यपूर्ण स्वतंत्रता

मोतीनगर: 15 अगस्त 2026 को जीवनदान समाज सेवा केंद्र द्वारा विभिन्न गाँवों में स्वतंत्रता दिवस बड़े उत्साह, उमंग और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। इस अवसर पर तीसरीमील और गंगोली सिलाई केंद्रों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम में कुल 115 महिलाओं, किशोरियों और ट्यूशन केंद्र के बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में देशभक्ति गीत, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ और प्रेरणादायक भाषण प्रस्तुत किए गए। महिलाओं और किशोरियों ने सक्रिय रूप से भाग लेते हुए अपनी प्रतिभा, रचनात्मकता और क्षमताओं का सुंदर प्रदर्शन किया। ट्यूशन केंद्र के बच्चों ने भी पूरे उत्साह के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों और भाषणों में भाग लेकर अपनी प्रतिभा दिखाई।

कार्यक्रम का सफल संचालन एवं मार्गदर्शन सि. अन्नम्मा, श्रीमती विनिता, सुश्री मुस्कान, सुश्री सबाना, श्रीमती नाहिदा और श्रीमती सुमन द्वारा किया गया। इस वर्ष का प्रेरणादायक विषय “उद्देश्यपूर्ण स्वतंत्रता सशक्त हृदय, प्रेरणादायक जीवन” सभी के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश लेकर आया। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को जलपान वितरित किया गया, जिससे आपसी प्रेम, भाईचारे और एकता की भावना और भी मजबूत हुई। यह स्वतंत्रता दिवस समारोह केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि एकता, शिक्षा, आत्मविश्वास, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक जिम्मेदारी का सुंदर संदेश बनकर सामने आया।



सि. अन्नम्मा MSI, मोतीनगर

जैविक खेती की ओर एक यात्रा

पिपरिया: ‘सुचेतना समाज सेवा केंद्र’ द्वारा शाहजहांपुर जिले के तीन ब्लॉकों और पीलीभीत जिले में लागू की गई परियोजना के माध्यम से, हम गरीब किसानों को जैविक खेती के बारे में अधिक जानकारी और विभिन्न सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूक करके उनके उत्थान के लिए काम कर रहे हैं। इसके साथ ही, हम किसानों के साथ मिलकर काम करते हैं, उनके प्रयासों का उत्साहवर्धन करते हैं और बेहतर विपणन (मार्केटिंग) अवसर पैदा करने का लक्ष्य रखते हैं ताकि उनके मूल्यवान जैविक उत्पाद बाजार तक पहुंच सकें। कई किसान इस परियोजना के क्रियान्वयन में उत्साहपूर्वक सहयोग कर रहे हैं। सुचेतना के साथ मिलकर काम करते हुए, वे अपने कृषि खेतों को उपजाऊ और उत्पादक भूमि में बदलने का प्रयास कर रहे हैं। कई किसानों ने अपने खेतों को जैविक खेती के प्रयोगात्मक केंद्रों में बदल दिया है और उन्हें बहुत ही उत्साहजनक परिणाम मिल रहे हैं। इसके साथ ही, कई महिलाओं ने अपने किचन गार्डन (गृह-वाटिका) को ताजी सब्जियों और अन्य उत्पादों के पूरी तरह से जैविक स्रोतों में बदल दिया है। वे स्वयं इस बात की गवाही देती हैं कि जैविक खेती के माध्यम से उगाई गई सब्जियों और अन्य उत्पादों का स्वाद और गुणवत्ता बेहतरीन होती है।

सुचेतना पिपरिया केंद्र के अंतर्गत आने वाले 15 गांव इस परियोजना के सकारात्मक परिणामों का अनुभव कर रहे हैं। जैसे ही हमने इस परियोजना का एक वर्ष पूरा किया, हमारे गांवों के किसानों द्वारा साझा किए गए कई अनुभवों और गवाहियों ने हमें जैविक खेती को और अधिक सक्रिय रूप से बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया है। जब प्रत्येक गांव के किसान अपने अनुभवों और उपलब्धियों को साझा करते हैं, तो हम उनके सामने उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण का फल देखते हैं। ये अनुभव हमें जैविक खेती को बढ़ावा देने, मिट्टी के स्वास्थ्य को बहाल करने और किसान समुदायों के जीवन व आजीविका में सुधार लाने के लिए अधिक प्रतिबद्धता के साथ अपने प्रयासों को जारी रखने की प्रेरणा देते हैं।



सि. फाउस्तीन DSS, पिपरिया

प्रेरणा की नई राह

दाहफार्म: 06 अगस्त 2026 की सुबह दाहफार्म केंद्र पर एक अलग ही उत्साह और ऊर्जा देखने को मिल रही थी। अवसर था दाहफार्म केंद्र के तत्वावधान में आयोजित ‘किशोरी ग्रुप लीडर्स’ के एक दिवसीय शैक्षिक एवं प्रेरणादायक भ्रमण कार्यक्रम का। इस आयोजन की मुख्य सोच सिर्फ एक दिन की सैर कराना नहीं, बल्कि इन बालिकाओं में नेतृत्व क्षमता, सामाजिक सौहार्द, पर्यावरण चेतना और एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करने की टीम भावना को गहराई से पिरोना था।

सुबह ठीक 8:30 बजे कार्यक्रम का शुभारंभ एक शांत और पावन माहौल में सामूहिक प्रार्थना के साथ हुआ। प्रार्थना के बाद जैसे ही यात्रा का आगाज हुआ, सभी 60 किशोरी लीडर्स के चेहरे खुशी से चमक उठे। इस पूरे भ्रमण का मार्गदर्शन

सि. ललिता एवं सि. जैनेट के कुशल हाथों में था। यात्रा को सुगम, अनुशासित और उद्देश्यपूर्ण बनाए रखने में कम्युनिटी मोबिलाइजर नीलेश कुमार, दीनदयाल, सुम्मेरलाल एवं रूबी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इतिहास, आस्था और सेवा का पहला पाठ: सफ़र की शुरुआत ऐतिहासिक और पवित्र स्थल गुरुद्वारा नानकमत्ता साहिब के दर्शन के साथ हुई। यहाँ की भव्यता और शांति ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। गुरुद्वारे के दर्शन के साथ ही प्रतिभागियों को सिख परंपरा, गुरु नानक देव जी के सार्वभौमिक उपदेशों, जात-पात से परे लंगर की सेवा भावना और आपसी भाईचारे के मूल्यों से रूबरू कराया गया। किशोरियों ने समझा कि एक सच्चा लीडर वही है जो बिना किसी भेदभाव के समाज की सेवा में सबसे आगे खड़ा रहे।

इसके बाद भ्रमण दल पीपल साहिब और बावली साहिब पहुँचा। इन पावन स्थलों की यात्रा के दौरान धार्मिक आस्था के साथ-साथ स्वच्छता, अनुशासन और सामाजिक समरसता जैसे विषयों पर एक जीवंत चर्चा हुई।

प्रकृति का संतुलन और जल संरक्षण पर संवाद: दोपहर ढलते-ढलते यात्रा का अंतिम पड़ाव बना नानक सागर बांध। बांध की विशाल जलराशि और आसपास फैले प्राकृतिक सौंदर्य के बीच जल संरक्षण, पर्यावरण सुरक्षा और प्रकृति के संतुलन जैसे गंभीर विषयों पर एक सहज संवाद आयोजित किया गया। खुले आसमान के नीचे किशोरियों ने जल की हर एक बूंद की कीमत और आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्यावरण को बचाने के व्यावहारिक उपायों पर विचार साझा किए। इसके बाद सभी ने एक साथ बैठकर दोपहर का भोजन किया, जहाँ आपस में खुशियाँ बाँटने और साथ मिलकर खाने का आनंद ही अलग था।

दोपहर 3:30 बजे सभी प्रतिभागी सुरक्षित रूप से वापस लौट आए। भ्रमण का समापन करते हुए सिस्टर ललिता जी ने प्रेरणादायी शब्दों में कहा, “इस तरह के कार्यक्रम किशोरी ग्रुप के लीडरों को केवल बोलने वाला नहीं, बल्कि धरातल पर बदलाव लाने वाला नागरिक बनाते हैं।” दाहफार्म सेंटर का यह प्रयास साबित करता है कि जब युवाओं को सही मार्गदर्शन और अनुभव मिलता है, तो वे समाज में एक नई और सकारात्मक क्रांति का आधार बनते हैं।

सि. ललिता PHJC, दाहफार्म



क्षमता निर्माण कार्यक्रम

किच्छा: दिनांक 8 और 9 अगस्त को काठगोदाम सुचेतना में काथलिक महिला स्वयं सहायता समूह के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 100 महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन द्वारा किया गया। इसके बाद बाइबिल से पवित्र वचन पढ़ा गया। कार्यक्रम में उपस्थित फा. डेरिक पिंटो, फा. रोमन डायस, फा. पायस मिनेजस के अलावा फा. विलियम, फा. सुनील, सि. नैन्सी, सि. दीपा, सि. मेरी, सि. अनूपा, सि. रीती, सि. स्मिता इन सबको पौधा भेंट कर स्वागत किया गया तथा कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। फा. डेरिक पिंटो ने मारथा, मरियम के सेवा कार्यों पर प्रकाश डालते हुये महिलाओं को समाज और परिवार में उनकी भूमिका का महत्व समझाया। सि. नैन्सी ने स्वयं सहायता समूह से होने वाले व्यक्तिगत, आर्थिक, सामाजिक लाभ के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। सि. अनूपा ने मोमबत्ती व डिटर्जेंट पाउडर बनाने की विधि समझायी सि. मर्लिन ने हर्बल दवाओं तथा उनको बनाने की विधि बतायी। सि. दीपा ने प्राप्त ज्ञान को अपने जीवन में उपयोग करने को बताया।

9 अगस्त को भाई राजीव ने कुछ मधुर गीतों व अभिनय गीतों के द्वारा कार्यक्रम को और अधिक रोचक बनाते हुये स्वयं सहायता समूह के दस्तावेज बनाने व रखरखाव करने का तरीका समझाया। फा. रोमन डायस ने महिलाओं को आशा के साथ बिना किसी संदेह के आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया। फा. पायस मिनेजस ने सभी महिलाओं को कैंसर जैसी घातक बीमारी से बचने के लिये सम्पूर्ण जानकारी दी तथा अभिनेत्री सोनाली बेंद्रे व खिलाड़ी युवराज सिंह ने इस बीमारी को मात देकर जीवन में कैसे आगे बढ़े इस सुन्दर उदाहरण के द्वारा उपस्थित महिलाओं में से कुछ महिलाओं ने अपने आसपास रहने वाले कैंसर पीड़ित लोगों को समय रहते सही जानकारी देने का निश्चय किया। इस कार्यक्रम के द्वारा महिलाओं में आत्मविश्वास, व्यवहारिक कौशल, छोटे-छोटे व्यवसाय शुरू करने तथा पल्लियों में और अधिक समूह बनाने का संकल्प लिया तथा एक दूसरे को प्रोत्साहित किया। फा. रवि ने ध्वनि व्यवस्था और भोजन सेवा में उत्साह पूर्वक सहयोग दिया, इस प्रकार सभी के सहयोग द्वारा यह कार्यक्रम सफल रहा।

सुनिता पीटर, किच्छा



एक नई सुबह

उदयपुर: 13 अगस्त 2026 का दिन उदयपुर गाँव के लिए एक बेहद खूबसूरत और खास सुबह लेकर आया। सुचेतना समाज सेवा संस्था (सेंटर दाहफार्म) द्वारा गाँव वालों की सेहत के लिए एक शानदार निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर सजाया गया था। इसके पीछे का विचार बहुत सीधा और दिल को छू लेने वाला था- “गाँव स्वस्थ रहेगा, तभी तो पूरा समाज समृद्ध बनेगा।”

सुबह के ठीक 10:00 बजे शिविर का आगाज़ हुआ। CHO श्रीमती अन्तिम जी के नेतृत्व में कम्युनिटी मोबिलाइजर दीनदयाल, रूबी और नीलेश कुमार पूरे मनोयोग से सहयोग कर रहे थे। उनकी मेहनत का असर साफ दिख रहा था- पंजीकरण काउंटर पर मुस्कुराते चेहरों के साथ ग्रामीणों की कतारें लग चुकी थीं।

अपनों का साथ और सेहत की बात:

गाँव के अपने BDC सदस्य श्री राजेन्द्र कुमार ने दिल खोलकर सहयोग दिया। उन्होंने शिविर के लिए एक बढ़िया जगह चुनी और लोगों के बैठने से लेकर ठंडे पानी तक की ऐसी व्यवस्था की कि हर किसी को अपनापन महसूस हुआ। शिविर के हर कोने में सेहत और जागरूकता की एक नई अलख जल रही थी:

- **बच्चों और माताओं की मुस्कान:** आंगनबाड़ी कार्यकर्ता माया देवी और शहनाज़ फातिमा जी माताओं और बच्चों के बीच बैठती थीं। वे बहुत ही प्यार और सरल भाषा में समय पर टीके लगवाने, कुपोषण से बचाव और घर के पौष्टिक खाने की अहमियत समझा रही थीं।
- **महिलाओं की सेहत का ध्यान:** आशा कार्यकर्ता सुशीला देवी और राजकुमारी जी ने गाँव की महिलाओं से मित्र बनकर बात की। उन्होंने महिलाओं को खून की कमी (एनीमिया) से उबरने, गर्भावस्था के दौरान सही देखभाल और परिवार नियोजन जैसी महत्वपूर्ण बातों पर खुलकर परामर्श दिया।
- **बचाव ही सबसे बड़ा इलाज:** सि. ललिता जी ने गाँव वालों को साफ-सुथरे पानी और मौसमी बीमारियों से बचने के आसान तरीके सिखाए।

खुशियों और भरोसे के आंकड़े: दिन ढलते-ढलते इस शिविर ने गाँव के कई परिवारों के जीवन में राहत की सांस घोली-

- 89 ग्रामीणों की बीपी, शुगर और सामान्य स्वास्थ्य की मुफ्त जाँच हुई।
- जाँच के दौरान 15 लोग ऐसे पहचाने गए जिनका बीपी (रक्तचाप) अनियंत्रित था। समय रहते इस बात का पता चलना उन 15 परिवारों के लिए किसी वरदान से कम नहीं था- उन्हें तुरंत सही देखभाल की सलाह दी गई।
- 23 महिलाओं ने एनीमिया से बचने और खुद को मजबूत बनाने के बेहतरीन तरीके सीखे।
- **मजबूत तालमेल:** सबसे खूबसूरत बात यह रही कि स्वास्थ्य विभाग, आंगनबाड़ी, आशा बहनों और संस्था ने एक परिवार की तरह मिलकर गाँव के हित में काम किया।

सूरज ढलने तक पूरे गाँव में एक अलग ही संतोष और खुशी का माहौल था। इस आत्मीयता से गदगद होकर गाँव के बुजुर्गों और महिलाओं ने एक सुर में कहा- “आपकी यह पहल हमारे दिल को छू गई, ऐसा स्वास्थ्य शिविर हमारे गाँव में हर 3 महीने में एक बार जरूर लगना चाहिए।”

नीलेश कुमार, दाहफार्म



देश के लिए प्रार्थना

ईसाई नगर: 14 अगस्त 2026 को स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर सेंट जोसेफ गिरजाघर, ईसाई नगर में पहली बार रात्रि जागरण का आयोजन श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ किया गया। इस अवसर पर राष्ट्र की शांति, एकता और समृद्धि के लिए विशेष प्रार्थना की गई। साथ ही, धन्य कुंवारी मरियम के स्वर्गारोपण के महापर्व के उपलक्ष्य में भी विशेष प्रार्थनाएँ अर्पित की गईं। रात्रि जागरण का प्रारंभ प्रशंसा एवं आराधना से हुआ, जिसमें उपस्थित विश्वासियों ने भजन, स्तुति और प्रार्थना के माध्यम से प्रभु की आराधना की। इसके पश्चात् विश्वासियों के लिए मेलमिलाप संस्कार का अवसर प्रदान किया गया। यूखरिस्तीय आराधना के दौरान सभी ने प्रभु येशु की उपस्थिति में शांतिपूर्वक प्रार्थना करते हुए राष्ट्र और विश्व में शांति के लिए विनती की।

फा. मॉरिस डेसा ने ईश्वर के वचन पर प्रेरणादायक प्रवचन दिया और विश्वासियों को राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों



को निभाने, प्रेम, भाईचारे और शांति की भावना को बढ़ाने तथा अपने जीवन में सुसमाचार के मूल्यों को अपनाने का आह्वान किया। रात्रि जागरण में 40 से अधिक विश्वासियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर फा. फिरोज, धर्मबहनों तथा अनेक विश्वासी उपस्थित रहे और सामूहिक प्रार्थना में सहभागी बने। जागरण के दौरान पवित्र मिस्सा भी श्रद्धापूर्वक अर्पित की गई। राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए ईश्वर का धन्यवाद करते हुए देश में शांति, सद्भाव, एकता और भाईचारे के लिए विशेष प्रार्थनाएँ की गई। साथ ही, माता मरियम की मध्यस्थता द्वारा भारत राष्ट्र को प्रभु के संरक्षण और आशीष में सौंपा गया।

श्रीमती मीनाक्षी कैपबेल



उम्मीद का केंद्र - मरिया सदन, दाहफार्म

दाहफार्म: सुचेतना समाज सेवा संस्था, केंद्र दाहफार्म के कार्यक्षेत्र में बसे गांवों में 20 दिव्यांग बच्चे रहते हैं। गरीबी और असहायता ने उन्हें बचपन से ही समाज से अलग कर दिया था। किसी को चलने में दिक्कत, किसी को बोलने में, किसी को सीखने में। शारीरिक और मानसिक चुनौतियों के साथ-साथ शिक्षा और सरकारी सुविधाएं भी उन तक नहीं पहुंच पाती थीं। इसी अंधेरे में रोशनी लेकर आई सुचेतना समाज सेवा संस्था, केंद्र दाहफार्म। सुचेतना ने इन 20 बच्चों को 'बोझ' नहीं माना। उनके लिए ये 20 'संभावनाएं' थीं। DCD परियोजना - Development of Children of Disability Program के तहत एक ही लक्ष्य रखा गया। इन बच्चों को शारीरिक, मानसिक और शैक्षिक रूप से समाज की मुख्यधारा से जोड़ना।

कैसे? एक-एक कदम से।

पहला कदम था स्वास्थ्य का। समय-समय पर डॉक्टर केंद्र में आते हैं। छोटे-छोटे हाथों और पैरों को सहारा देकर फिजियोथैरेपी होती है। आज वही बच्चे जो बिस्तर से नहीं उठ पाते थे, अब दो कदम चलकर मुस्कुराते हैं।

दूसरा कदम था पोषण का। थैरेपी के साथ ताकत भी जरूरी है। इसलिए हर तीसरे महीने हर बच्चे को पोषक थैली दी जाती है। दाल, तेल, प्रोटीन और जरूरी सप्लीमेंट।

तीसरा कदम था शिक्षा का। कॉपी, पेन, किताब, पेंसिल, रबर... वो चीजें जो आम बच्चों के लिए सामान्य हैं, इन 20 बच्चों के लिए सपना थीं। आज वो अक्षर लिख रहे हैं, रंग भर रहे हैं।

चौथा कदम था सम्मान का। संस्था के कार्यकर्ता गांव-गांव जाकर दिव्यांग प्रमाण पत्र, यूडीआईडी कार्ड और पेंशन के कागज बनवाते हैं। ताकि सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे इन परिवारों तक पहुंचे।

आखिरी कदम था परिवार को सहारा देने का। IGP & Income Generation Program के लिए मदद मिलती है ताकि बच्चे का इलाज हो और घर की रसोई भी चलती रहे। आज बदलाव दिख रहा है। जो बच्चा कभी कोने में बैठा रहता था। वो घूम फिर रहा है। अब सुचेतना संस्था की सिस्टर दीदी और भैया रास्ता दिखाते हैं।" सुचेतना का मानना है - "दिव्यांगता अक्षमता नहीं है। बस अवसर और पोषण की जरूरत है।" 20 बच्चों की ये यात्रा अभी जारी है। हर थैरेपी सेशन के साथ, हर पोषक थैली के साथ, हर क्लास के साथ... ये बच्चे मुख्यधारा की ओर एक कदम और बढ़ रहे हैं।

सुचेतना समाज सेवा संस्था, केंद्र दाहफार्म



युवा दिवस

शाहजहाँपुर: दिनांक 9 अगस्त शाहजहाँपुर डीनरी के संत रफाएल गिरजाघर में युवा दिवस का उत्साहपूर्ण एवं आध्यत्मिक आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न पल्लियों के कुल 48 यूवाओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

कार्यक्रम की शुरुआत सभी प्रतिभागियों के लिये नाश्ते के साथ हुई इसके पश्चात् सभी युवा पवित्र आराधना में सम्मिलित हुये जिसे युवा निर्देशक फा. विजय टेलिस द्वारा संचालित किया गया। इसके पश्चात् पवित्र मिस्सा अर्पित की गई जिसकी अगुवाई फा. अभिनव द्वारा की गई। इस अवसर पर फा. विजय टेलिस एवं फा. पॉल व फा. संतोष की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। पवित्र मिस्सा के पश्चात् युवाओं के लिये अल्पहार की व्यवस्था की गई।

इसके बाद विभिन्न पल्लियों से आये युवाओं ने अपने-अपने द्वारा तैयार किये गये कार्यक्रम प्रस्तुत किये। प्रत्येक प्रस्तुति में युवाओं की प्रतिभा, उत्साह, रचनात्मकता की सुंदर झलक देखने को मिली। कार्यक्रम के दौरान युवाओं को अनेक प्रेरणादायक संदेश जीवनोपयोगी विचार भी सुनने को मिले इस संदेशों ने युवाओं के भीतर आत्मविश्वास सकारात्मक सोच



एवं प्रभु पर विश्वास करने के लिए अधिक मजबूत किया।

इसके पश्चात् सभी युवाओं को अलग-अलग समूहों में बाँटा गया और उनसे आत्मचिंतन करते हुये यह लिखने के लिए कहा गया कि उन्हें अपने जीवन में किन बातों या परिस्थितियों से सबसे अधिक भय लगता है और वे उस भय को किस प्रकार दूर कर सकते हैं। इस गतिविधि ने युवाओं को अपने मन की बात साँझा करने एक दूसरे को सुनने तथा एक दूसरे से सीखने का अवसर दिया।

इसके पश्चात् विभिन्न मनोरंजक खेलों का आयोजन किया गया इन खेलों के माध्यम से युवाओं को एक दूसरे के साथ समय बिताने, संवाद बढ़ाने एवं नयी मित्रता बनाने का मौका मिला। कार्यक्रम के अंत में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। जिसमें विभिन्न गतिविधियों एवं खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले युवाओं को सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् सभी के लिये दोपहर के भोजन की व्यवस्था की गई जिसके बाद युवा दिवस समारोह का समापन हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम अत्यंत सुव्यवस्थित, आनंदमय प्रेरणादायक एवं आध्यत्मिक रहा।

फा. विजय टेल्लिस, शाहजहाँपुर



मूल कलीसियाई समुदाय - क्षेत्रीय सम्मेलन

वाराणसी: नव साधना केंद्र में 1 - 2 अगस्त 2026 को आगरा क्षेत्रीय मूल कलीसियाई समुदाय सम्मेलन का दो दिवसीय आयोजन उत्साह, सहभागिता और आध्यात्मिक नवीनीकरण के वातावरण में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में 11 धर्मप्रांतों से कुल 125 प्रतिभागियों, 4 धर्माध्यक्षों तथा 11 BEC निर्देशकों ने भाग लिया। बरेली धर्मप्रांत से 15 प्रतिभागियों ने सम्मेलन में प्रतिनिधित्व किया। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य स्थानीय कलीसियाई समुदायों को और अधिक जीवंत बनाना, विश्वासियों की सक्रिय सहभागिता को बढ़ावा देना तथा सामुदायिक जीवन, सहभागिता और मिशन के माध्यम से एक अधिक सहभागी कलीसिया के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ना था। सम्मेलन का केंद्रीय विषय था: “सहभागी कलीसिया के लिए मूल कलीसियाई समुदाय का नवीनीकरण” (Renewing Basic Ecclesial Communities for a Synodal Church)।

सम्मेलन का शुभारंभ प्रातः प्रार्थना एवं पवित्र यूखरिस्त के साथ हुआ, जिसे वाराणसी के धर्माध्यक्ष यूजीन जोसेफ ने अर्पित किया। इसके बाद बरेली धर्मप्रांत द्वारा बाइबिल की शोभायात्रा एवं प्रतिष्ठापन, दीप प्रज्वलन तथा नव साधना कला केंद्र के विद्यार्थियों द्वारा स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया गया। मुख्य वक्ताओं धर्माध्यक्ष विल्फ्रेड मोरास (अध्यक्ष, आगरा क्षेत्रीय BEC) ने कहा कि आज की सहभागी कलीसिया की आवश्यकता को पूरा करने के लिए BEC को नए उत्साह और नई दृष्टि के साथ मजबूत करना आवश्यक है। उन्होंने ईश वचन पर आधारित जीवंत समुदायों के निर्माण तथा हर विश्वासी की सक्रिय भागीदारी पर बल दिया। फा. जॉर्ज जैकब (SAC - Executive Secretary, CCBI Commission for BECs), ने BEC को पड़ोस और परिवार के स्तर पर कलीसिया के जीवन को सजीव बनाने का प्रभावी माध्यम बताया तथा अधिक से अधिक लोगों को BEC की बैठकों में सहभागी बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने सुसमाचार-वाचन, आपसी विश्वास, साझा जीवन और मिशन को BEC की पहचान के रूप में प्रस्तुत किया। श्री इमैनुएल जॉनसन (BEC National Council) ने BEC के माध्यम से सामान्य विश्वासियों को कलीसिया के मिशन में सक्रिय भागीदार बनाने तथा स्थानीय समुदायों को अधिक जीवंत बनाने पर प्रकाश डाला। उन्होंने पड़ोस में शांति एवं सद्भाव स्थापित करने, ईश वचन को जीवन में उतारने और सुसमाचार आदान-प्रदान को नियमित बनाने का आह्वान किया। सि. मार्गरीटा (Communio India) उन्होंने Communio India के मिशन और देशभर में उसके कार्यों के बारे में जानकारी दी तथा इस मिशन के लिए निरंतर सहयोग एवं सहभागिता का आग्रह किया। उन्होंने बताया कि मजबूत समुदायों के निर्माण के लिए आपसी संबंध, विश्वास, साझेदारी और मिशन की भावना आवश्यक है।

दो दिवसीय सम्मेलन से यह स्पष्ट हुआ कि BEC केवल एक बैठक या कार्यक्रम नहीं, बल्कि कलीसिया को परिवारों और पड़ोस के बीच जीने का एक तरीका है। BEC के माध्यम से ईश वचन, यूखरिस्त, सहभागिता, सेवा, सुसमाचार प्रचार और सामाजिक सद्भाव को दैनिक जीवन से जोड़ा जा सकता है। प्रतिभागियों ने संकल्प लिया कि अपने-अपने धर्मप्रांतों और पल्लियों में BEC को अधिक सक्रिय बनाया जाएगा तथा अधिक परिवारों और सामान्य विश्वासियों को इसमें जोड़ा जाएगा। विशेष रूप से सिनोडल कलीसिया की तीन मूल भावनाओं सहभागिता, सहभागिता में एकता/सामुदायिक जीवन और मिशन-को जमीनी स्तर पर मजबूत करने पर बल दिया गया।

एलिजाबेथ पैट्रिक, रानीखेत (बरेली धर्मप्रांतीय बीईसी सचिव)

कारागार में स्वतंत्रता समारोह

सितारगंज: निर्मला इंटर कॉलेज नौसर द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर और आगामी रक्षाबंधन को दृष्टिगत रखते हुए 14 अगस्त, 2026 को केंद्रीय कारागार, सितारगंज में एक अनुष्ठे और प्रेरणादायक कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अनुराग मलिक (केंद्रीय कारागार सितारगंज अधीक्षक) रहे। इस अवसर पर फा. डेरिक पिंटो, फा. सुनील क्रास्ता, सि. वाइलेट डिस्जूजा प्रधानाचार्या, निर्मला इंटर कॉलेज नौसर, ब्रदर मरिया दास प्रधानाचार्य, संत फ्रांसिस कॉलेज, टनकपुर उपस्थित रहे। निर्मला विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने देशभक्ति से ओत प्रोत कई शानदार प्रस्तुतियां दी। समाज और जीवन को सही दिशा दिखाने वाले एक नाटक 'मन का कैदी' का भी सफल मंचन किया गया जिसने सभी को आत्म चिंतन के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम का एक अत्यंत भावुक और आत्मीय क्षण वह था, जब आगामी रक्षाबंधन पर्व को ध्यान में रखते हुए विद्यालय के शिक्षिकाओं, छात्राओं एवं धर्मबहनों ने जेल के कैदियों और वहां तैनात सिपाहियों, पुलिस कर्मियों को स्नेह पूर्वक राखी बांधी। कार्यक्रम में कैदियों की भी विशेष सहभागिता रही।

मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक श्री अनुराग मलिक ने अपने संबोधन में निर्मला विद्यालय द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम, स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ और जीवन में सुधार की दिशा में सकारात्मक कदम उठाने के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने कहा यह कार्यक्रम अन्य जगहों पर ना कर हमारे कारागार को चुना है यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। आगे भी ऐसे कार्यक्रम के लिए उन्होंने आमंत्रित किया। फा. डेरिक पिंटो ने अपने आशीष वचनों से सभी का मार्गदर्शन किया और अपने जीवन में अच्छे विचारों को अपनाने पर जोर देते हुए कहा कि अगर हमारा मानव हृदय साफ है तो कोई भी कैद नहीं रख सकता।

इसी दौरान मानवता की एक मिसाल भी पेश की गई। लालपुर का एक कैदी श्री अशोक, की नौ महीने की सजा माफ करवाई एवं उसे श्रद्धेय फा. डेरिक पिंटो की ओर से रु. 26,000/- धनराशि की विशेष सहायता प्रदान कर जेल से आजाद किया। ताकि वह मुख्य धारा से जुड़कर एक नए और बेहतर जीवन की शुरुआत कर सके।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में सभी अतिथियों, कैदियों, सिपाहियों और बच्चों को मिष्ठान तथा केक का वितरण किया गया। संचालक श्री इमानुएल मसीह एवं श्रीमती प्रीति पोखरिया ने उपस्थित सभी अतिथियों, जेल प्रशासन, पीलीभीत की धर्मबहनों और विद्यालय परिवार का हृदय से आभार व्यक्त किया।

श्रीमती शाहिदा (स0अ0), निर्मला इण्टर कॉलेज, नौसर



रोजगार मेला - मेरा अनुभव



हाल ही में मुझे संत अल्फोंसस महागिरजाघर बरेली में आयोजित एक रोजगार मेले में शामिल होने का अवसर मिला। यह मेरे लिए एक बहुत ही मूल्यवान सीखने का अनुभव था। इस कार्यक्रम में विभिन्न उद्योगों की कई जानी-मानी कंपनियाँ एक ही छत के नीचे आई थीं। एक फ्रेशर होने के नाते, मैं भर्ती करने वालों से मिलने और विभिन्न नौकरी के अवसरों के बारे में जानने के लिए बहुत उत्साहित थी। रोजगार मेले में जाने से पहले मैंने अपना रेज्यूमे तैयार किया था। रोजगार मेले में, मैंने विभिन्न कंपनियों के स्टॉल्स पर जाकर HR प्रतिनिधियों से बात की। उन्होंने नौकरी की भूमिकाओं, पात्रता मानदंड, वेतन और करियर में आगे बढ़ने के अवसरों के बारे में बताया। मैंने कई कंपनियों को अपना रेज्यूमे भी जमा किया और कुछ इंटरव्यू में भी शामिल हुई। हालाँकि शुरू में मैं थोड़ी नर्वस थी, लेकिन भर्ती करने वालों से बातचीत करने पर मेरा आत्मविश्वास बढ़ता गया। मुझे यह एहसास हुआ कि इंटरव्यू के दौरान संचार कौशल, आत्मविश्वास और सही तैयारी कितनी महत्वपूर्ण होती है। कुल मिलाकर, रोजगार मेला एक सार्थक और प्रेरणादायक अनुभव था। इसने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया, भर्ती प्रक्रिया की मेरी समझ को बेहतर बनाया, और मुझे अपने कौशल को लगातार विकसित करने के लिए प्रेरित किया। मैं इस कार्यक्रम से नए ज्ञान, मूल्यवान अनुभव और भविष्य में सफल करियर की उम्मीद के साथ लौटी।

सिमरन सब्बरवाल, दाहफार्म



बाइबिल प्रश्नोत्तरी - 131

राजाओं का दूसरा ग्रन्थ (अध्याय 13-25)

अध्याय एवं पद संख्या का उल्लेख करें। कृपया अपने उत्तर 24 सितम्बर 2026 तक भेज दें।

1. राजा को खबर मिली थी कि -----का राजा तिरहाका उस से लड़ने आया है।
2. कौन यहोआहाज़ की जगह राजा बना ?
3. कब याबेश का पुत्र शल्लूम राजा बना ?
4. प्रभु ने अपने-----और-----के मुख से इस्राएल और योद्धा को चेतावनी दी।
5. किसने कहा, “प्रभु अपना वचन पूरा करेगा, इसके प्रमाण स्वरूप प्रभु आपको यह चिन्ह देगा बताइए, छाया दस सोपान आगे जाए, या दस सोपान पीछे?”
6. “बाबुल के राजा ने उन्हें हमात प्रांत के रिबला में मरवा

दिया।” सही या गलत ?

7. कौन सी देवी को हटवा कर उसे येरुसालेम के बाहर केद्रोन नाले में ले जाकर जलवा दिया गया ?
8. कौन सी भाषा में प्रधान रसद प्रबंधक ने आगे बढ़कर उच्च स्वर में कहा, “अस्सुर के राजाधिराज की बात सुनो” ?
9. “अमस्या ने एक न सुनी।” सही या गलत ?
10. किस राजा ने ठेलों के पटरे और चिलमचियाँ हटवायी ?
11. कौन मनस्से की जगह राजा बना ?
12. कितनी उम्र में सिदकिया किया राजा बना ?

Prepared by: Miss Shweta D Cruze

सूचना: कृपया अपने उत्तर इस ईमेल पते पर भेजें: chetnabareilly1989@gmail.com

अथवा इस नम्बर के वाट्सएप पर भेजें: 8533886703 उत्तर के साथ अपना और अपनी पल्ली का नाम अवश्य लिखें।



MY FAITH (CATECHISM QUIZ) - 131

CATECHISM OF THE CATHOLIC CHURCH: ARTICLES (2578-2597)

Please send your answers latest by 24 September 2026. Kindly send your answers only:

1. The prayer of the ____ is always sustained by praise.
2. Who is the 'father' of the prophets?
3. In which book the Word of God becomes man's prayer?
4. Who must have learnt from Hannah how "to stand before the Lord" ?
5. Who draws light and strength for their mission by their 'one to one' encounters with God?
6. ____ is a decisive test for the faith of the people of God.

7. Who is par excellence the king 'after God's own heart'?
8. Whose prayer responds to the living God's initiative for the salvation of his people?
9. What constitutes the masterwork of prayer in the old testament?
10. The psalms were gradually collected into the ____ of the Psalter.
11. What relies on God's promise and covenant?
12. What is prayed by Christ and fulfilled in him?

Prepared by: Miss Shweta D Cruze

**बाइबिल प्रश्नोत्तरी - 130 के उत्तर**

- | | |
|-----------------|---|
| 1. एलीशा 4:32 | 7. नामन के कोढ़ 5:27 |
| 2. यहोराम 9:22 | 8. गेहजी 8:5 |
| 3. अतल्या 11:13 | 9. तिशाबी एलियाह 1:8 |
| 4. योआश 12:20 | 10. मोआब 3:4 |
| 5. सही 6:26 | 11. चार 7:3 |
| 6. एलीशा 2:22 | 12. अहाब के पुत्र यहोराम के ग्यारहवें वर्ष 9:29 |

मेरा विश्वास (धर्मीशिक्षा प्रश्नोत्तरी) - 130 के उत्तर

- | | |
|------------------------------------|--------------------------------|
| 1. Prayer CCC 2572 | 7. True CCC 2564 |
| 2. Righteous and faithful CCC 2577 | 8. Heart CCC 2562 |
| 3. Man CCC 2566 | 9. Religions CCC 2566 |
| 4. John Damascene CCC 2559 | 10. Jacob CCC 2573 |
| 5. Petition CCC 2561 | 11. Moses CCC 2576 |
| 6. Apostle's creed CCC 2558 | 12. The old testament CCC 2568 |

बाइबिल प्रश्नोत्तरी - 130 के विजेता

- प्रथम पुरस्कार - प्रेमलता, धमोला
- द्वितीय पुरस्कार - एंजेल मरिया, रानीखेत
- तृतीय पुरस्कार - एलिजाबेथ, नवाबगंज

My Faith (धर्मीशिक्षा प्रश्नोत्तरी) - 130 के विजेता

- प्रथम पुरस्कार - शिल्पा लकड़ा, बाजपुर
- द्वितीय पुरस्कार - सि. दुलारी, टनकपुर
- तृतीय पुरस्कार - सि. शांतिप्रिया, करेली

BIRTHDAYS

1	Rev. Fr. Naveen D'Souza	04 September
2	Rev. Fr. Joseph Pascal Lobo	14 September
3	Rev. Fr. Arul Raja Shekaran	15 September
4	Rev. Fr. Rakesh Prabhu	18 September
5	Rev. Fr. Sanjeev Kumar	23 September